ईश्वर से साझेदारी

हर दृष्टि से नफे का सौदा

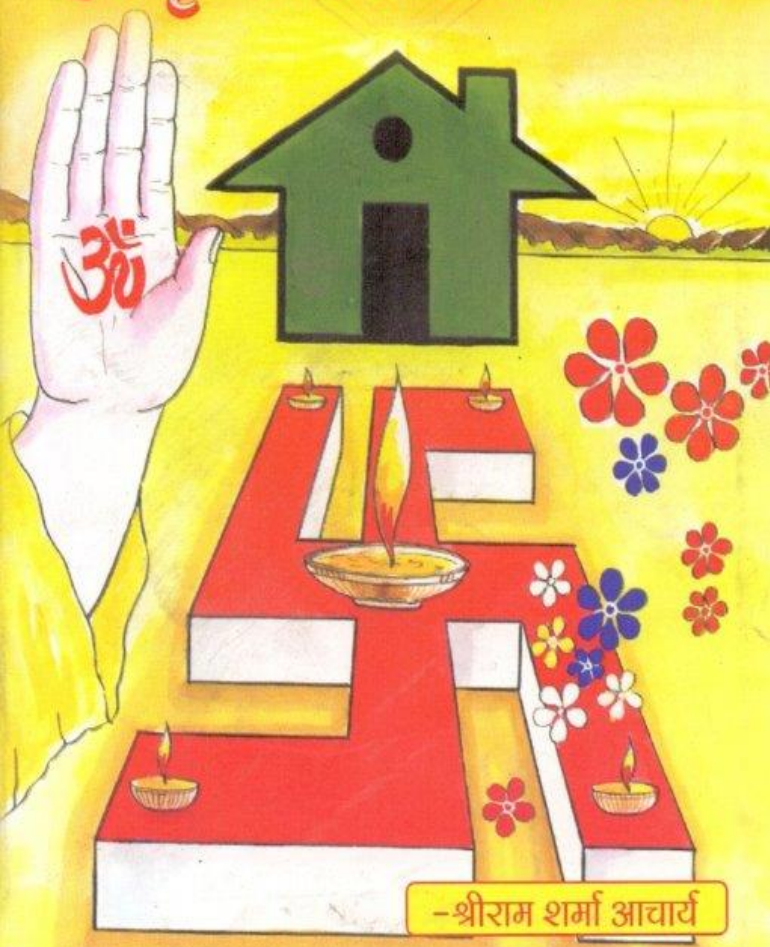

-श्रीराम शर्मा आचार्य

ईश्वर से साझेदारी
हर दृष्टि से नफे का सौदा

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनर्मुद्रित सन् २०१३ मूल्य : १२.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

☼

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

☼

ISBN
81-89309-00-5

☼

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर को साझीदार बनायें विभूतिवान बनें

जीवन के किसी भी क्षेत्र में किसी ने एकाकी, अपने ही बलबूते पर सफलता अर्जित कर ली हो, ऐसा बहुत कम देखने में आता है। आहार मनुष्य जीवन की नितांत सामान्य बात है, पर उसे जुटाने में भी कितने ही लोगों का सहयोग और साझेदारी अभीष्ट है, इसे सभी जानते हैं।

कोई भी व्यक्ति अकेले गृहस्थ नहीं बसा सकता है, पति-पत्नी मिलकर ही उस अभाव की पूर्ति करते हैं। एक पहिए की गाड़ी नहीं चल सकती, अकेले धन या ऋण आवेश से विद्युतधारा प्रवाहित नहीं हो सकती। जीवन के लिए जल की आवश्यकता सभी समझते हैं; किंतु काम आग के बिना भी नहीं चल सकता। एक डाँड से नाव एक किनारे तो खड़ी की जा सकती है, पर नदी पार नहीं की जा सकती। जीवन का हर व्यापार साझेदारी की नीति पर बना हुआ है, जिसमें पग-पग पर औरों के सहयोग की हर किसी को आवश्यकता पड़ती है।

बड़ी और महान उपलब्धियों में तो सहयोग की अपेक्षाएँ और भी सघन होती है। धर्मचक्र प्रवर्तन का महान कार्य गौतम बुद्ध ने पूर्ण किया, किंतु वह कार्य अधूरा पड़ा रहता यदि हर्षवर्धन ने आगे बढ़कर साझेदारी न निभाई होती। मान्धाता और शंकराचार्य, महाराणा प्रताप और भामाशाह, समर्थ रामदास और शिवाजी, रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की साझेदारी के पावन स्मारक और कृतियाँ अभी हजारों वर्षों तक भुलाए न भूलेंगी। अवतारों तक को यही नीति अपनानी पड़ी, राम के साथ लक्ष्मण का, श्रीकृष्ण के साथ अर्जुन का, योगदान सभी जानते हैं। अंधे और पंगे के पूरक सिद्धांत की तरह साझेदारी का नियम उन सभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपूर्णताओं को दूर करता है, जिनका सामना प्राय: संसार में हर किसी को करना पड़ता है।

जीवन की छोटी-छोटी बातों में ही जब सहयोग और साझेदारी का इतना महत्त्व है, तो मनुष्य जीवन जैसे अलभ्य अवसर को सार्थक बनाने, उसे दीन-हीन तथा दरिद्र स्थिति में पड़ा रहने देने के लिए चौरासी लाख योनियों के पश्चात मिले सुरदुर्लभ जीवन को सफल बनाने में उसका कितना महत्त्व हो सकता है, यह सहज ही समझा जा सकता है।

जीवन व्यवसाय में ईश्वर को साझीदार बनाने की दूरदर्शिता अपनानी चाहिए। इससे बढ़कर बुद्धिमत्ता दूसरी हो ही नहीं सकती। ईश्वर की सामर्थ्य अनंत है, उसकी अनुकंपा से मिल सकने वाली संपदाएँ भी असीम हैं। ऐसी समर्थ शक्ति के साथ यदि किसी के लिए घनिष्ठता प्राप्त कर सकना संभव हो सके, तो समझना चाहिए कि उसने पारस को छू कर लोहे के सोने में परिणत हो जाने जैसी स्थिति प्राप्त कर ली। समर्थ व्यक्तियों की मैत्री से कितनों ने कितने बड़े लाभ उठाए हैं, इसे देखने में सत्संगति का शास्त्रकारों ने जो अत्यधिक माहात्म्य बताया है, यह अक्षरश: सही सिद्ध होता है। स्वाति बूंद के संपर्क से सीप में मोती, केले में कपूर, बांस में वंशलोचन उत्पन्न होने की बात कही जाती है। चंदन वृक्ष के समीप उगने वाली झाड़ियों के सुगंधित हो जाने की बात सुनी जाती है। भृंग कीट का उदाहरण सर्व विदित है, दूध में मिलकर पानी तद्रूप हो जाता है। गंदे नाले का पानी पवित्र गंगा में मिल जाने के उपरांत गंगाजल कहलाता है और वैसा ही सम्मान पाता है। आग की घनिष्ठता में पहुँचने वाली हर वस्तु अग्नि रूप बन जाती है। बूंद समुद्र में मिलने के उपरांत बूंद नहीं रहती, वरन् अपनी क्षुद्र सत्ता को उतना ही विशाल अनुभव करती है। यह सर्व समर्थ शक्ति के साथ जुड़ जाने पर मिलने वाले लाभों की प्रतिक्रिया है। ईश्वर जैसी महान सत्ता के साथ यदि सचमुच ही किसी को वास्तविक साझेदारी प्राप्त कर सकने का अवसर मिल जाए, तो समझना चाहिए कि उसने यह सब कुछ प्राप्त कर लिया जो इस जीवन में—इस संसार में पाने योग्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'लाठी से थन छूना', एक उक्ति है। जिसका अर्थ है-दूर रहकर वे प्रयोजन पूरा करने की इच्छा करना जो समीपता और घनिष्ठता के सहारे ही संपन्न हो सकते हैं। कोई व्यक्ति गाय के थनों को हाथों से सहलाकर उसे पसुराने की क्रिया करके दूध निकालने की अपेक्षा ऐसे ही लंबा बाँस थनों से छुलाने का प्रयत्न इस आशा से कर रहा होगा कि इतने भर से ही दूध की धार बरसने लगेगी। उसी प्रयत्न के उपहास में यह 'लाठी से थन छूना' वाली उक्ति चली होगी। हर कोई जानता है कि ऐसे प्रयत्न सफल नहीं हो सकते। उनके कर्त्ता निराश रहते और उपहासास्पद बनते हैं। ईश्वर के संबंध में भी यही बात है। उसके साथ सघन संपर्क मिलाने पर ही आशाजनक अनुदानों की अपेक्षा की जा सकती है। यह सघन संपर्क कैसे हो, इसका 'तत्त्वदर्शन पूजा उपासना के क्रिया कृत्यों से, भजन-पूजन के निर्धारित कर्मकांडों से सीखा जा सकता है। अर्चा, आराधना के विधि-विधान हमें उन तथ्यों से परिचित कराते हैं; जिनके सहारे ईश्वर तक पहुँचना, उसके साथ घनिष्ठता स्थापित करना और अनुग्रह का लाभ ले सकना संभव होता है। थन का स्पर्श करके दूध दुहा जाता है, यह बात सही है, पर इसमें इतना और जोड़ना चाहिए कि स्पर्श मात्र से ही दूध की धार नहीं छूटती। थनों को हाथ से सहलाने की एक ऐसी विशेष क्रिया भी करनी होती है, जो बछड़े द्वारा मुंह से थन चूसने के समतुल्य हो। ईश्वर भक्ति की सफलता इस बात पर निर्भर है कि भक्त ने भगवान से कितनी वास्तविक सघनता स्थापित की।

यहाँ वास्तविक और अवास्तविक घनिष्ठता का अंतर भी अच्छी तरह समझ लिया जाना चाहिए। वास्तविक घनिष्ठता को आत्मीयता भरी मैत्री कहते हैं। मित्रता प्रेम के आधार पर जुड़ती, दृढ़ होती और बढ़ती है। प्रेम का ही दूसरा नाम भक्ति है। ''रसो वै स:'' उक्ति में प्रेम को ही परमेश्वर माना गया है। प्रेम किसी भावुकता का नाम नहीं है। उसके लिए आँसू टपकाने या ऐसी ही कुछ अन्य भाव क्षेत्र की उछल-कूद करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। प्रेम एक स्थिर सिद्धांत है, जिसे दूसरे शब्दों में सघन आत्मीयता कहते हैं,इस स्तर का उदय होते ही प्रेमी की हित कामना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रधान हो जाती है। उससे लेने का नहीं देने का ही जी करता है। यह देना जितना अधिक उच्च-स्तर का—जितना सर्वांगपूर्ण है, उतना ही मैत्री का आनंद आता है। उसी अनुपात से मित्रता सुदृढ़ बनती और फलप्रद होती है। पारस्परिक सहयोग मित्रता का मूल प्रयोजन है। इसमें जो अग्रणी होता है, उसे प्रेमी कहते हैं। भक्त की मन:स्थिति भी यही है कि वह भगवान से प्रेम करता है। प्रेमी होने के नाते उससे कुछ माँगता नहीं वरन् अपने पास जो कुछ है उसे देने के लिए व्याकुल रहता है, अवसर ढूँढ़ता है कि किस समय, किस प्रकार, उसे क्या दिया जा सकता है। इन प्रयत्नों को करते-करते एक दिन ऐसी स्थिति आ जाती है कि अपनी चेतना और संपदा का समर्पण प्रभु चरणों पर हो जाता है। अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ समाप्त हो जाती हैं, उनके स्थान पर ईश्वर की आकाँक्षा का वर्चस छाया रहता है। जीवन की दिशाधारा अपनी इच्छानुकूल नहीं बहती वरन् उधर चलती है जिधर परमेश्वर की प्रेरणा होती है। चेतना के उपरांत मानवी अस्तित्व का दूसरा पक्ष है—संपदा। इसमें शरीर, कौशल और धन तीनों का समन्वय रहता है। इसका उपयोग लिप्साओं की पूर्ति में नहीं वरन् उन प्रयोजनों के लिए लगने लगता है, जिनके लिए सृष्टा ने इस बहुमूल्य अमानत को जीवात्मा का स्तर परखने के लिए सौंपा है।

यह साझेदारी किसकी हो? मनुष्य को मिली विभूतियाँ और ईश्वर प्रदत्त क्षमताएँ इतनी गरिमामय हैं, जिन्हें देखकर उसे सृष्टि का राजकुमार ही कह सकते हैं। शिक्षा, दीक्षा, वाणी और विचारों के आदान-प्रदान, संस्कृति और सामाजिकता के सुंदर उपहार किसी अन्य प्राणी को वैसे नहीं मिले जैसे कि मनुष्य को। इतने उच्चकोटि की प्रतिभा और क्षमताओं से संपन्न मनुष्य की साझेदारी किसी पशु-पक्षी, जीव-जंतु से नहीं, अपने से श्रेष्ठ से ही हो सकती है। जीवन की गहराई और तात्त्विक दृष्टि के कारण भी यह साझेदारी परमात्मा की ही हो सकती है। आज का मनुष्य दीन-हीन स्थिति में यदि है, तो उसका एकमात्र कारण ईश्वरीय साझेदारी से वंचित रहना है। यदि परमात्मा हमारे जीवन व्यापार में घुल जाए तो लोहे का-सा-काला कुरूप जीवन पारस स्पर्श से बने स्वर्ण की तरह साकार हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता है। मनुष्य जीवन की अपूर्णताएँ केवल मात्र परमात्मा के संस्पर्श और साझेदारी से ही पूर्ण हो सकती हैं।

ईश्वर के साथ साझेदारी का अर्थ ही है मिलजुल कर काम करना और साधनों को एकत्रित करके पारस्परिक सहमति से गतिविधियों का निर्धारण करने की रीति-नीति को अपनाना। जीवन एक व्यवसाय है, एक समूचा उद्योग है, इसमें ईश्वर के साथ साझेदारी को जीवंत कर लिया जाए तो फिर घाटे की, असफलता की, विपन्नता आने की कोई संभावना नहीं है। आज का हमारा ईश्वर विमुख जीवन ही दु:ख से घिरा और दारिद्र्य से भरा रहता है। यदि उसमें ईश्वर की साझेदारी जुड़ सके तो अज्ञान, अशक्ति और अभाव के तीनों ही संकटों से सर्वदा के लिए निवृत्ति मिल सकती है।

आत्मा की अमरता का विश्वास सचमुच भू-लोक का अमृत है। इसे पान करने के उपरांत मनुष्य की दिव्य दृष्टि खुलती है। वह कल्पना करता है कि मैं अतीत काल से, सृष्टि के आरंभ से एक अविचल जीवन जीता चला आया हूँ। अब तक लाखों करोड़ों शरीर बदल चुका हूँ। पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, जलचर-नभचर के लाखों मृत शरीरों की कल्पना करता है और अंतर्दृष्टि से देखता है कि ये इतने शरीर समूह मेरे द्वारा पिछले जन्मों में काम में लाए एवं त्यागे जा चुके हैं। उसकी कल्पना भविष्य की ओर भी दौड़ती है, अनेक नवीन सुंदर ताजे शक्ति संपन्न शरीर सुसज्जित रूप से सुरक्षित रखे हुए उसे दिखाई पड़ते हैं। जो निकट भविष्य में उसे पहनने हैं। यह कल्पना—यह धारणा—ब्रह्म विद्या के विद्यार्थी के मानस लोक में सदैव उठती, फैलती और पुष्ट होती रहती है। यह विचारधारा धीरे-धीरे निष्ठा और श्रद्धा का रूप धारण कर जाती है, जब पूर्णरूप से, समस्त श्रद्धा के साथ यह विश्वास करता है कि वर्तमान जीवन मेरे महान अनंत जीवन का एक छोटा-सा परमाणु मात्र है, तो उससे समस्त मृत्यु जन्य शोकों की समाप्ति हो जाती है। उसे बिल्कुल ठीक वही आनंद उपलब्ध होता है जो किसी अमृत का घट पीने वाले को होना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''मैं पवित्र अविनाशी और निर्लिप्त आत्मा हूँ'' इस महान सत्य को स्वीकार करते हुए मनुष्य अमरत्व के समीप पहुँच जाता है। उसका दृष्टिकोण अमर, सिद्ध, महात्मा और देवताओं जैसा हो जाता है। इस परिस्थिति के भव-बंधन में बँधा हुआ इधर-उधर नाचता नहीं फिरता, वरन् अपने लिए वैसे ही संसार का जान-बूझकर निर्माण करता है, जैसा आत्म-विश्वास और आत्म-परायणता का मार्ग है। यदि आप अपना सम्मान करते हैं, अपने को आदरणीय मानते हैं, अपनी श्रेष्ठता और पवित्रता पर विश्वास करते हैं, तो सचमुच वैसे ही बन जाते हैं। जीवन की अंत:चेतना उसी साँचे में ढल जाती है, और रक्त के साथ दौड़ने वाली विद्युत शक्ति में ऐसा प्रवाह उत्पन्न हो जाता है, जिसके द्वारा हमारे सारे काम-काज ऐसे होने लगते हैं, जिनमें उपरोक्त भावनाओं का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई देने लगता है। आत्म-तिरस्कार करने वालों के कामों को देखकर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यह नीच वृत्ति का अकर्मण्य, आलसी, दास, दीन और अपाहिज है। अपने आपे का तिरस्कार करने वाले आत्म-हत्यारे अपना यह लोक भी बिगाड़ते हैं और परलोक भी।

आत्मा की अमरता पर विश्वास करना ही अमृत है। 'मैं अविनाशी हूँ, पग-पग पर दिखाई देने वाले भय को मार भगाकर निर्भयता प्रदान करने वाला यह मृत्युंजय बीज मंत्र है, अपने अंदर पवित्रता अनुभव करने में आत्म सम्मान है और अपने को अविनाशी समझने से आत्म-विश्वास का प्रादुर्भाव होता है। निराशा और भय के झूलेमें झूलने वाले लोगों को 'मैं अविनाशी हूँ' यह मंत्र जीवन संदेश देता है, वह कहता है—उठो ! कर्त्तव्य पर प्रवृत्त होओ, तुम्हारा जीवन अखंड है, कपड़े बदल जाएँगे, पर तुम नहीं बदलोगे शरीर बदल जाएँगे, पर जीवन नहीं बदलेगा। अपने ऊपर विश्वास करो। आत्मा और परमात्मा पर विश्वास करो, तुम्हें कोई नष्ट नहीं कर सकता। इस विश्वास के सहारे उसका जीवन तेजस्विता से परिपूर्ण श्रद्धामय, आनंदमय हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा को साझेदार बनाने का अर्थ है, वह प्रतिक्षण हमारे जीवन के हर क्रिया-कलाप में घुला हुआ आच्छादित रहे, हम कभी उससे रिक्त न रहें, यह वह अमृत है जो समस्त चिंता और तृष्णा को समाप्त कर देता है।

जीवन में अभय की प्राप्ति, आत्मा के दर्शन, मुक्ति-निर्वाण को सर्वोपरि पुरुषार्थ कहा जाता है। उसे पाकर मनुष्य समर्थ हो जाता है, पर यह तभी है जब परमात्मा अपने साथ घुला रहे। जिसके अंत:करण में यह परमार्थ जाग गया उसका जीवन धन्य हुआ माना जाता है।

संसार के प्रत्येक व्यक्ति की इच्छाएँ प्राय: (१) आरोग्य और दीर्घजीवन (२) आर्थिक संपन्नता तथा (३) सफलता और सम्मान की प्राप्ति के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती हैं। हर व्यक्ति किसी ऐसे पारस पत्थर की तलाश में रहता है जो लोहे जैसी मनोकामनाओं का स्पर्श करते ही उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर दे। ऐसा कोई पत्थर संसार में किसी को मिल गया हो—ऐसा अभी तक सुनने में नहीं आया, किंतु परमात्मा की साझेदारी एक ऐसा पारस प्रदान करती है, जो जीवन को सोने जैसा सुंदर बना देती है, उस समय वे सांसारिक इच्छाएँ भी तुच्छ प्रतीत होती हैं।

यह पारस क्या है? यह है प्रेम। एक काला कलूटा आदमी जिसे आप पूर्णतया कुरूप, गँवार या असभ्य कह सकते हैं, अपनी स्त्री के लिए कामदेव सा रूपवान और इंद्र के समान सामर्थ्यवान लगता है। जैसे शची अपने इंद्र को पाकर प्रसन्न है और अपने को सौभाग्यशालिनी मानती है, वैसे ही एक भीलनी अपने अर्धनग्न और धनहीन भील को पाकर प्रसन्न है। विचार कीजिए कि इसका कारण क्या है? जो आदमी सबको कुरूप और गंदा लगता है, वह एक स्त्री को इतना प्रिय क्यों लगता है? इसका कारण है—प्रेम। प्रेम एक प्रकार का प्रकाश है, अँधियारी रात में आप अपनी बैटरी की बत्ती से किसी वस्तु पर रोशनी फेकें तो वह वस्तु स्पष्ट रूप से चमकने लगेगी, जबकि पास में पड़ी हुई दूसरी अच्छी-अच्छी चीजें भी अंधियारी के कारण काली-कलूटी और श्री हीन-सी मालूम पड़ेंगी, तब वह वस्तु जो चाहे सस्ती या भद्दी क्यों न हो बैटरी का प्रकाश पड़ने के कारण स्पष्टतया चमक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रही होगी, अपने रंग रूप का भला प्रदर्शन कर रही होगी, आँखों में जँच रही होगी। प्रेम में ऐसा ही प्रकाश है। जिस किसी से भी प्रेम किया जाता है वही सुंदर, गुणकारी लाभदायक, भला, बहुमूल्य, मनभावन मालूम पड़ने लगता है। माताका दिल जानता है कि उसका बालक कितना सुंदर है। अमीर को अपने हीरे-जवाहरात और महल कीमती अनुभव होते हैं; गरीबों को अपनी टूटी-फूटी झोंपड़ी फटे-पुराने कपड़े और मैले-कुचैले सामान से भी वैसी ही ममता होती है।

प्रेम एक सजीव बिजली है, वह जिनके ऊपर पड़ती है उसे गतिशील बना देती है। निराश, उदास, रूखे, गिरे हुए और झुंझलाए-झल्लाए हुए लोगों को एकदम परिवर्तित कर देती है। वे आशा, उत्साह, उमंग, प्रसन्नता और प्रफुल्लता से भर जाते हैं। देखा गया है कि उपेक्षा और तिरस्कार ने जिन लोगों को दुर्जन बना दिया था, वे ही प्रेम की डली चख कर बड़े उदार, सद्गुणी और सज्जन बन गए। दीपक स्नेह की चिकनाई को पीकर जलता है। मनुष्य का जीवन भी कुछ ऐसा ही है। जिसे स्नेह से सींचा गया है, उसका दिल हरा-भरा, फूला-फला रहेगा। जो स्नेह से वंचित है, वह सूखा, झुँझलाया, दुःखी, निराश और अनुदार बन जाएगा। इसलिए दूसरों को यदि अपना इच्छानुवर्ती, मधुर-भाषी, प्रिय-व्यवहारी बनाना है तो इस निर्माण कार्य के लिए प्रेम चाहिए। अंधकार को प्रकाश में, निर्जीवता को जीवन में, मरघट को उद्यान में बदल देने की शक्ति का नाम प्रेम है। इतना चमत्कार पूर्ण सजीव परिवर्तन कर सकने वाली शक्ति को यदि पारस कहा जाता है तो कुछ अत्युक्ति की बात नहीं है।

ऐसा पारस वास्तव में बनाया गया होता, तो सृष्टि क्रम के असंतुलित और बाधित होने में कोई आशंका न थी, पर वह पारस जो परमात्मा के रूप में मिलता है, जीवन के हर क्षण हर श्वास को स्वर्णमय बना देता है। प्रेम का अंत वहीं होता है जहाँ स्वार्थ और मोह भरा हो। जिसे ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास होगा, जो संसार के वास्तविक स्वरूप को पहचानता होगा, वह आत्मा से प्यार करेगा, शरीर से नहीं। ऐसे व्यक्ति के लिए न तो कोई अपना न पराया वरन् सभी में एक ही प्रेमास्पद सत्ता ओत-प्रोत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिखाई देगी। यह दिव्य दृष्टि, यह निर्मलता जीवन को आनंदपूर्ण बना देती है। जिसने उसका रसास्वादन किया, मीरा, कबीर, सूर, तुलसी, नानक बन गया।

परमात्मा के सान्निध्य में प्राप्त होने वाली तीसरी निधि कल्पवृक्ष की है। कल्पवृक्ष तपस्वी जीवन के रूप में फलित होता है। तप का अर्थ है—सच्ची लगन और निरंतर प्रयत्न—ये ही महान साधनाएँ हैं, जिनसे परमात्मा प्रसन्न होता है और इच्छित वरदान प्रदान करता है।

उदासीन, आलसी और निकम्मा व्यक्ति दो घंटा काम करके, एक पर्वत पार कर लेने की थकान अनुभव करता है; किंतु उत्साही, उद्यमी और अपने काम में दिलचस्पी लेने वाले व्यक्ति सोने के समय लगे रहते हैं और जरा भी थकते नहीं। लगन, दिलचस्पी, रुचि और झुकाव एक प्रकार का डायनुमा है जो काम करने के लिए क्षमता की विद्युत शक्ति हर घड़ी उत्पन्न करता रहता है।

उत्साह, स्फूर्ति, लगन, धुन, परिश्रम प्रियता, साहस, धैर्य, दृढ़ता और कठिनाई को देखकर विचलित न होना ये तप के लक्षण हैं। जिसने तप द्वारा इन गुणों को पैदा किया, अपने मनोवांछित तत्त्व को पाने के लिए खून-पसीना बहाना सीखा, वह एक प्रकार का सिद्ध है। कल्पवृक्ष की सिद्धि उसके आगे हाथ बाँधे खड़ी रहती है। ऐसे आदमी जो चाहते हैं, कर गुजरते हैं। जो चाहते हैं, प्राप्त कर लेते हैं। नेतृत्व, लोक-सेवा, धन उपार्जन, प्रतिष्ठा, ज्ञान, भोग आदि संपदाएँ पाने को जिनके मन में लालसाएँ उठती हों, उन्हें सबसे पहले अपने को तपस्वी बनाना चाहिए। आलस्य, प्रमाद, समय का अपव्यय, बकवाद, ठलुआपंथी, निराशा, निरुत्साह, अस्थिरता आदि दुर्गुणों को हटाकर तपश्चर्या के सद्गुणों को अपने अंदर धारण करना चाहिए। तप ही कल्पवृक्ष है। जिस किसी ने इस दुनिया में कुछ पाया है, परिश्रम से पाया है। आप भी कुछ पाना चाहते हैं तो अदम्य उत्साह के साथ घोर परिश्रम करना अपना स्वभाव बनाइए। इस साधना के फलस्वरूप आपको कल्पवृक्ष जैसी प्रतिभा मिलेगी और उसके द्वारा आपकी हर प्रकार की इच्छा, आकाँक्षाएँ आसानी से पूरी हो जाया करेंगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा को अपने जीवन व्यवसाय में साझीदार बनाकर उपरोक्त तीनों अनुदान वरदान प्राप्त किए जा सकते हैं। साझे में चलने वाली कई कंपनियाँ दूसरों से पूँजी प्राप्त कर अपना काम चलाती हैं। इसी प्रकार कई मालिकों को अपने पिता से ही उत्तराधिकार में संपत्ति मिल जाती है और वह उसको चतुरता से उपयोग करता हुआ अपनी संपन्नता, श्री, समृद्धि को बढ़ाता रहता है। परमात्मा भी आपके जीवन में यह पूँजी लगाने के लिए तैयार है। आपको भी उत्तराधिकार में यह संपदा प्राप्त हो रही है। आप इसका उपर्युक्त नियोजन और सदुपयोग करने में जरा चतुराई बरतिए तो सही।

❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर को पाना है तो हम उसकी मर्जी पर चलें

छाया को पकड़ने के लिए दौड़ने वाले के पल्ले केवल थकान और खीज ही पड़ती है। इसके विपरीत प्रकाश की ओर मुँह करके चलने वाले को सहज ही यह लाभ मिलता है कि छाया उसके पीछे-पीछे चलने लगे। छाया की ओर भागने वाले का फोटो खींचने पर उसका चेहरा काला होता है, किंतु प्रकाश की ओर चलने वाले का छाया चित्र प्रकाश से भरा-पूरा स्वच्छ और स्पष्ट दिखाई पड़ता है। ईश्वर प्रकाश है और काया-छाया, वासना, तृष्णा और अहंता का सम्मिश्रण माया कहलाता है। उन्हें पूरा करने के लिए मनुष्य का पुरुषार्थ कम पड़ता है। उपार्जन की एक सीमा है, किंतु तृष्णा असीम है। महत्त्वाकाँक्षाओं का कहीं अंत नहीं। उपभोग और संग्रह से तृप्ति किसी को नहीं मिली। हिरण्याक्ष, रावण, कुवेर, सिकंदर जैसे सुसंपन्न समझे जाने वाले प्रबल पराक्रमी व्यक्ति भी अभाव और असंतोष का ही रोना रोते मरे। आग पर घी डालते रहने से वह बुझती कहाँ है, उल्टे भड़कती है, न संग्रह की ललक पूरी होती है और न अहंकार संतोष दिलाने में इंद्र जितना वैभव भी पर्याप्त सिद्ध होता है। तृप्ति और शांति मृग-तृष्णा में भटकते रहने पर भी कहाँ मिलती है? यह छाया के पीछे दौड़ना हुआ। इस भगदड़ में मिलता तो कुछ नहीं; जीवन के बहुमूल्य क्षण खोते, अशांति के गर्त में गिरते और नष्ट होते चले जाते हैं। आतुरता, अवांछनीयता का मार्ग पकड़ती है। फलतः पापों और अपयश की गठरी और अधिक बोझिल होती चली जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यही है लोक प्रवाह जिसमें कूड़े-करकट की तरह लोग किसी अनिश्चित दिशा में निरुद्देश्य बहते चले जाते हैं। रोते-कलपते जिंदगी के दिन गुजारने वाले, मरते समय अपनी मूर्खता पर भारी पश्चात्ताप करने वाले प्राय: इसी मन:स्थिति के होते हैं। माया ग्रस्त—भव बंधनों से जकड़े हुए—अज्ञान के अंधकार में भटकने वाले प्राणी प्राय: यही भूल करते हैं। उन्हें माया के ही सपने दीखते हैं। यह कोई सुझाता ही नहीं कि यह मृग-मरीचिका भी है, इससे असंतोष और अपयश के अतिरिक्त और कुछ मिलने वाला नहीं है।

बुद्धिमत्ता इसी में है कि मनुष्य प्रकाश की ओर चले। ज्योति का अवलम्बन ग्रहण करे। ईश्वर के सान्निध्य में ही आलोकवान जीवन जीने का आनंद तथा प्रकाश स्तंभ की तरह भटकाव में असंख्यों को बचाने का श्रेय लाभ इस दूरदर्शिता को अपनाने वाले प्राप्त करते हैं। ईश्वर की साझेदारी जिस जीवन में बन पड़ेगी उसमें घाटा पड़ने की कोई संभावना नहीं है। यही शांति और प्रगति का सुनिश्चित मार्ग है।

"पूजा करना—मंशा पूरी कराना" यह बात प्रलोभन भर है। तथ्यपूर्ण नहीं। ईश्वर को हमें अपनी मर्जी पर चलाने में तभी सफलता मिल सकती है जब हम पहले उसकी मर्जी पर चलना सीखें। प्रलोभन और प्रशंसा की कीमत पर भगवान जैसी दिव्य चेतना को फुसला कर अपना उल्लू सीधा करने में न आज तक किसी को सफलता मिली है और न भविष्य में किसी को मिलेगी। यदि इतनी छोटी प्रक्रिया में ईश्वरीय अनुग्रह प्राप्त करना संभव रहा होता तो मंदिरों के पुजारी, तंत्र-मंत्र में उलझने वाले देव व्यवसायी अब तक करोड़पति बन गए होते, उनमें दरिद्र और विपन्न एक भी दिखाई न पड़ता।

ईश्वर प्राप्ति के लिए ऐसा दृष्टिकोण एवं क्रिया-कलाप अपनाना पड़ता है जिसे प्रभु समर्पित जीवन कहा जा सके। जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आत्मिक प्रगति का मार्ग अपनाना पड़ता है और वह यह है कि हम प्रभु से प्रेरणा की याचना करें और उसके संकेतों पर चलने का साहस करें। उपासना का मर्म और उद्देश्य यही है कि मनुष्य अपने लक्ष्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को , इष्ट को समझें और उसे प्राप्त करने के लिए प्रयास करें। उपासना कोई क्रिया कृत्य नहीं है। उसे जादू नहीं समझा जाना चाहिए। आत्म-परिष्कार और आत्म विकास का तत्त्व दर्शन ही अध्यात्म है। उपासना उसी मार्ग पर जीवन प्रक्रिया को धकेलने वाली एक शास्त्रानुमोदित और अनुभव प्रतिपादित पद्धति है। इतना समझने पर प्रकाश की ओर चल सकना बन पड़ता है। जो ऐसा साहस जुटाते हैं उन्हें निश्चित रूप से ईश्वर मिलता है। अपने को ईश्वर के हाथ बेच देने वाला व्यक्ति ही ईश्वर को खरीद सकने में समर्थ होता है। ईश्वर के संकेतों पर चलने वाले में ही इतनी सामर्थ्य उत्पन्न होती है कि ईश्वर को अपने संकेतों पर चला सके। लालच की पूर्ति के लिए ईश्वर को फुसलाने वाली बिडंबनाएँ लोग रचते तो हैं पर उनमें किसी का भी सफल होना असंभव है। ज्ञान का देवता—अज्ञानियों की लिप्सा पूरी करने के लिए निमित्त बनना स्वीकार कर लेगा, ऐसी आशा करना दुराशा के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

हम ईश्वर की मर्जी पर चलें। उसी की प्रेरणाओं के अनुरूप अपना दृष्टिकोण बदलें और क्रिया-कलाप का अभिनव निर्धारण करें। उत्कृष्टता और आदर्शवादिता का समन्वय ही हमारे अंत:करण में ईश्वर का अवतरण समझा जा सकता है। पवित्रता और उदारता के दो शब्दों में ही उपासना और साधना का सारा रहस्य छिपा हुआ है। जीवन क्रम को आदर्श और अनुकरणीय बनाया जाए। गतिविधियों में परमार्थ को बढ़ा-चढ़ा स्थान देकर आत्म-विस्तार की भूमिका में प्रवेश किया जाए। अपने को ईश्वर के घर से आया और वहीं पहुँचने वाला एक प्रतिनिधि भर माना जाए। संसार क्षेत्र में वही अभिनय किया जाए जो जीवनोद्देश्य के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। जीवन व्यवसाय में ईश्वर की साझेदारी का यथार्थ स्वरूप यही है, न वह इनसे कम में बन पड़ती है और न अधिक कुछ करने की आवश्यकता है।

इन दिनों हम सबको प्रचंड आत्ममंथन करना चाहिए और सोचना चाहिए कि भविष्य में भी उसी कटीले मार्ग पर चलते रहना है जिस पर चलते-चलते इतना समय बिता दिया गया अथवा कोई प्रगतिशील कदम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उठाना है। अच्छा हो हमारे निष्कर्ष ऐसा निर्धारण कर सकें जिनमें आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण के दोनों उद्देश्य पूरे होते हैं।

अपनी भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं को सीमित करें। शरीर और परिवार के निर्वाह की व्यवस्था पर्याप्त मानें जिसमें औसत भारतीय को रहना पड़ा रहा है। आत्म परिष्कार का यही प्रथम चरण है। इसे अपनाने पर अभाव और असंतोष से निवृत्ति मिलेगी और प्रतीत होगा कि अपने पास पैसा प्रचुर परिमाण में मौजूद है, जिसे आवश्यकता से अधिक कहा जा सके। दूसरा चरण यह है कि जीवन वरदान के साथ जन्म-जात रूप से जुड़ी हुई विभूतियों का, उपार्जित संपदाओं का कहने लायक भाग ईश्वरीय प्रयोजनों की पूर्ति के लिए प्रस्तुत किया जाए। सही लेखा-जोखा लिया जा सके तो प्रतीत होगा कि अपने पास, श्रम, बुद्धि, प्रतिभा एवं साधनों की इतनी मात्रा मौजूद है जिससे न केवल संतोष पूर्वक निर्वाह हो सकता है वरन् उसका एक बड़ा भाग ईश्वर की प्रेरणा को पूरा करने के लिए भी दिया जा सकता है। कामना घटाई और भावना बढ़ाई जानी चाहिए। उपभोग की ललक छूटे और उपयोग का विवेक जागे तो समझना चाहिए जीवन व्यवसाय में ईश्वर की साझेदारी का प्रयत्न चल पड़ा।

सुदामा चावल की पोटली बगल में दबाए थे और भगवान से कुछ प्राप्त करने पहुँचे थे। भगवान ने उन्हें बताया कि वे देते तो हैं पर लेने वाले की पात्रता भी परखते हैं। पोटली के चावल न दिए जा सके तो अनुदारता दिव्य अनुग्रह को धारण कैसे कर सकेगी? सुदामा को चावल देने पड़े, इसके उपरांत ही भगवान के अनुदानों को वे पा सके। हमें पहली दृष्टि अपनी पोटली के चावलों पर डालनी होगी।

बीज गलता और वृक्ष रूप में परिणत होता है। यही सनातन रीति है। अपने को आदर्शों के लिए चलाना शुरू करें, तो उसका प्रतिफल हमें कल्पवृक्ष बनने का अवसर प्रदान करेगा। फेफड़ों में भरी पिछली साँस को बाहर निकालने पर ही नई प्राण वायु का प्रवेश शरीर में होता है। मल त्याग करने के उपरांत जब पेट खाली होता है तब भूख लगती है और नया भोजन खाया जाता है। पेट या फेफड़ों को खाली न किया जाए तो न ताजी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हवा मिलेगी और न नया रक्त उत्पन्न करने वाले आहार का ही लाभ उठाया जा सकेगा। पूंजी लगाने पर व्यवसाय होता है। थैली खरचने पर थैला मिलता है। कृपणता से बढ़कर आत्मिक प्रगति में और कोई व्यवधान है नहीं। संकीर्ण स्वार्थपरता अपनाकर मनुष्य सांसारिक जीवन में तिरष्कृत होता है। ऐसे लोग किसी का स्नेह, सद्भाव एवं सहयोग अर्जित नहीं कर सकते। आध्यात्मिक जीवन का तो आधार ही उदारता है। उदारता के मूल्य पर ही सांसारिक जीवन में सहयोग खरीदा जाता है। ईश्वर के साथ आदान-प्रदान आरंभ करने का श्रीगणेश ही सेवा धर्म अपनाकर किया जाता है। कर का मनका फेरते रहने वाले यदि मन का-मनका नहीं फेरते तो उनको जप साधना का अभीष्ट परिणाम उपलब्ध नहीं होता है।

सृष्टि क्रम में यज्ञ तत्त्व ही सर्वोपरि है। उसके सहारे संसार स्थिर रहता और फलता-फूलता है। बादल अपना पानी खेतों पर बरसाते हैं, उस हानि की भर पाई समुद्र द्वारा निरंतर होती रहती है। नदियाँ खेत बगीचों को सींचने दौड़ती हैं, तो हिमाच्छादित शिखर उनकी क्षति पूर्ति करते हैं। जमीन को खाद देने के लिए पेड़ अपने पीले पत्ते टपकाते हैं, बदले में प्रकृति उन्हें नई कोपलें ही नहीं नए फूलों और फलों से भी लाद देती है। भेड़ अपनी ऊन परोपकार में देती है बदले में उसे हर साल नई ऊन मिलती है। रीछ अपना एक बाल भी किसी को नहीं छूने देता फलतः प्रकृति भी अपनी मुट्ठी समेट लेती है और प्रारंभ में जितने बाल मिले थे उतने से अधिक पाने का फिर कभी उसे सौभाग्य ही नहीं मिलता।

ईश्वर की सजीव साझेदारी में उस ओर से पर्याप्त साधन जुटा दिए गए, अब अपनी बारी है कि अपना पक्ष भी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करें। मनुष्य जीवन का एकमात्र उद्देश्य इस विश्व उद्यान को सुविकसित और सुसंस्कृत बनाने में ईश्वर का हाथ बटाना है। इस धरोहर को इसी प्रयोजन के लिए दिया गया है। सेवा धर्म अपनाकर हम अपने को परिष्कृत, समाज को उपकृत और ईश्वर को प्रसन्न करने का तिहरा लाभ उठाते हैं। उपेक्षा करके उपासना कृत्य का स्वरूप फुसलाने के लिए रची गई विडम्बना बनकर रह जाता है। भक्त प्रेमी होता है। प्रेम का परिचय उदार सहयोग के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता। हमें ईश्वर से कुछ माँगने की आवश्यकता नहीं है। पात्रता बढ़ने के साथ-साथ पिता सहज ही अपने साधन और अधिकार स्वयं ही हस्तांरित करता जाता है। जितना गहरा गड्ढा होगा। वर्षा का जल उसमें उतना ही भरता चला जाएगा। उथले पात्र में मेघ माला द्वारा बरसाए गए अजस्र अनुदान में से भी मात्र उतना ही मिल पाता है जितनी कि उस बर्तन की परिधि होती है। हमें अपनी पात्रता और परिधि बढ़ानी चाहिए और उसके लिए ईश्वरीय प्रयोजनों के निमित्त अपने अनुदानों की मात्रा बढ़ानी चाहिए।

योग साधना का अर्थ है—उदात्त चिंतन, तपश्चर्या का तात्पर्य है—आदर्शों के लिए कष्ट सहना। आत्मिक प्रगति की लंबी यात्रा इन्ही दो चरणों को क्रमिक गति से उठाते चलने पर संपन्न होती है। ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य पर पहुँच सकना इन्हीं दो आधारों के सहारे संभव होता है। हमारे व्यवसाय का परिधान जो भी हो—अंत:दृष्टि यही रहनी चाहिए कि हमें आदर्श और उदार बनना है। इस मार्ग की एकमात्र बाधा कृपणता की संकीर्ण स्वार्थपरता को निरस्त करना है, इस सुरसा के मुँह में से निकले बिना कोई हनुमान राम-काज कर सकने में समर्थ नहीं हो सकता।

हमारे जीवन व्यवसाय में ईश्वर की साझेदारी का नया निर्धारण होना चाहिए। अपने को विश्व-उद्यान में माली की भूमिका निभाने वाला एक ईश्वरीय प्रतिनिधि भर मानना आरंभ करें। शरीर और परिवार का परिपालन इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर पूरा करें कि उन्हें सुरक्षित और सुविकसित रखने की जिम्मेदारी अपने कंधे पर आई है। यह नीति निश्चित हो सके तो औचित्य की कसौटी पर क्षण-क्षण में अपनी गतिविधियों और आकाँक्षाओं को परखा जाता रहेगा कि कहीं ललक लिप्सा औचित्य की सीमा को तो नहीं छू रही है। अपने विचार और प्रयास कहीं भौतिक प्रयोजनों में ही तो सीमाबद्ध होकर नहीं रह गए हैं। समय और शक्तियों का विभाजन हमें स्वार्थ और परमार्थ दोनों के बीच करना चाहिए। भौतिक ही नहीं आत्मिक प्रगति भी अपने लक्ष्य में सम्मिलित रहनी चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार को ही नहीं ईश्वर को प्रसन्न रखना भी एक बड़ा काम है। शरीर को सुखी रखना ठीक है, पर आत्मा की आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

साझेदारी में लाभांश का, उपलब्धियों का उचित विभाजन होता है। हमें अपनी समय संपदा का विभाजन इस प्रकार करना चाहिए कि उसमें लोक और परलोक के दोनों ही प्रयोजन सधते रहें। चौबीस घंटे समय में से ८ घंटे उपार्जन के लिए, ७ घंटे सोने के लिए, ५ घंटे अन्य कार्यों के लिए लगाए जाएँ। २० घंटे शरीर परिवार के लिए—लौकिक निर्वाह के लिए पर्याप्त माने जाने चाहिए। शेष चार घंटे ईश्वरीय प्रेरणा और आत्मा की आवश्यकता पूरी करने के लिए लगने चाहिए। मस्तिष्क में चिंतन लौकिक ही न चलता रहे। आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण की बात सोचने में भी विचार सामर्थ्य का समुचित उपयोग होना चाहिए। अपने प्रभाव से कितने ही लोगों से संपर्क बनाने और उनसे लाभ उठाने में प्रतिभा का उपयोग होता रहता है। यह प्रतिभा अपने संपर्क क्षेत्र में सत्प्रवृत्तियाँ विकसित करने के लिए भी प्रयुक्त होनी चाहिए। अपने धन के उपार्जन का एक सुनिश्चित अंश ज्ञान यज्ञ के युग धर्म के परिपालन में नियमित रूप से लगना चाहिए। परिवार में यदि पाँच सदस्य हैं तो एक छोटा सदस्य ईश्वर को भी माना जाए और प्रत्येक कुटुंबी के लिए जितना करना तथा खरचना पड़ता है उतना ही ईश्वर के निमित्त भी नियत-निर्धारित किया जाए।

प्रातः उठते ही सोचा जाए, ईश्वर के प्रतिनिधि की तरह आज का दिन—एक जीवन—सत्प्रयोजनों को पूर्ति के लिए घर और बाहर के क्षेत्र में व्यतीत करना है। दिन भर अपने चिंतन और कर्तृत्व पर कड़ी दृष्टि रखी जाए और परखते रहा जाए कि उसमें निकृष्टता का समावेश तो नहीं हो रहा है। सजगता रहने से अनैतिक तत्त्वों का आक्रमण प्रायः नहीं हो पाता। रात्रि सोते समय मरण की गहरी अनुभूति की जाए। सृष्टा के घर जाने और सौंपे गए उत्तरदायित्वों का लेखा-जोखा देने की बात स्मरण रखी जाए तो रात की शयन बेला और प्रातःकाल की संध्या एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अच्छे धर्मोपदेशक जैसी प्रेरणाएँ देती रह सकती है। ईश्वर की साझेदारी इन्हीं आधारों को अपनाने से संभव है। उपासना अपना चमत्कारी प्रतिफल तभी दे सकती है, जब यह जीवन साधना के रूप में परिणत हो जाए। इतना बन पड़े तो सामान्य दीखने वाला व्यक्ति भी असामान्य महामानव बनने की दिशा में द्रुतगति से अग्रसर हो सकता है। इसी में जीवन की सार्थकता है और पूर्णता भी।

❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपासना की सफलता सुनिश्चित साधना पद्धति पर निर्भर

विद्यार्थी को अच्छे नंबर से उत्तीर्ण होने और उस सफलता के आधार पर उच्च पद पाने के लिए कई बातों पर आश्रित रहना पड़ता है। अपना निजी मनोयोग एवं परिश्रम तो सर्वप्रथम है ही, उसके बिना तो गाड़ी एक कदम नहीं बढ़ती, पर इसके अतिरिक्त भी अन्य दो साधन चाहिए। इसमें एक है—उपयुक्त शिक्षक एवं सुनिश्चित पाठ्यक्रम। दूसरा है—अभिभावकों का सहयोग, अनुदान। ये तीनों सुयोग जब बन पड़ते हैं तो सफलता सुनिश्चित हो जाती है। इनमें से एक आधार भी लड़खड़ाने लगे, तो समझना चाहिए कि प्रगति क्रम रुका और सफलता संदिग्ध हो गई। अपवाद रूप में तो कोई एकाकी मात्र अपने बलबूते भी बहुत कुछ कर सकता है, पर साधारण क्रम यही है। निजी पुरुषार्थ के अतिरिक्त साधना और सहयोग की भी हर प्रसंग में आवश्यकता पड़ती है। उसके न मिल सकने पर सुयोग्यों को भी असफलता का दुःख उठाना पड़ता है।

छात्र की सफलता का उदाहरण देकर यह बताया गया है कि भौतिक और आत्मिक प्रगति के लिए सर्वत्र उपरोक्त त्रिविध साधनों की आवश्यकता पड़ती है। जिन्हें मिल जाते हैं वे सफलता का श्रेय लेते हैं, जिन्हें इससे वंचित रहना पड़ता है वे अपने प्रयत्न पुरुषार्थ में कोई कमी न होते हुए भी दुर्भाग्य ग्रसित रहते हैं। पुरुषार्थ का महत्त्व सर्वोपरि होते हुए भी वह एकाकी ऐसा नहीं ही है जो अभीष्ट प्रतिफल उपलब्ध कर सके। साधन और सहयोग के बिना प्रबल पुरुषार्थ भी असफल रहता पाया गया है। विद्यार्थी को उपयुक्त अध्यापक न मिले और अभिभावक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके लिए भोजन, वस्त्र, पुस्तक, फीस आदि का प्रबंध न करे तो पुरुषार्थी और मेधावी होते हुए भी उसे अभीष्ट प्रतिफल से वंचित रहना पड़ेगा।

आत्मिक क्षेत्र की सफलता के संबंध में भी यही बात है। साधना पद्धति सही और सुनिश्चित होनी चाहिए । दुर्भाग्य से इन दिनों भारतीय आध्यात्मिकता के क्षेत्र में अराजकता का साम्राज्य है। अन्य धर्मों में सुनिश्चित साधन पद्धतियाँ बनी हुई है, उन्हें श्रद्धापूर्वक अपनाकर अनुयायी अपना प्रगतिक्रम जारी रखते हैं। मुसलमानों में मौलवी और ईसाइयों में पादरी अपना-अपना नया मजहब नहीं चलाते। अपनी-अपनी नई साधना पद्धतियाँ नहीं गढ़ते। अपनी मनमर्जी के नए-नए मंत्र और विधान नहीं उगाते, पर इस संबंध में हिन्दू समाज को दुर्भाग्य ग्रस्त ही कहना चाहिए कि हर धूर्त गुरुनामधारी ने अपनी डेढ़ ईंट की अलग मसजिद खड़ी की और ढाई चावल की खिचड़ी पकाई हैं। उपासना के क्षेत्र में हर गुरुनामधारी ने अपना एक विशेष संप्रदाय शास्त्रों, आप्तवचनों एवं परंपराओं की पूरी अवहेलना करते हुए गढ़ लिया है। पर्यवेक्षण में उसे हारना न पड़े इसलिए यह तुर्रा लगा दिया है कि जो विधि बताई गई है उसे प्रकट न किया जाए। जबकि समस्त संसार में विज्ञजन अपने प्रतिपादनों की प्रामाणिकता एवं विशिष्टता सिद्ध करने के लिए उन्हें साहसपूर्वक तर्क एवं प्रमाणों सहित प्रस्तुत करते हैं, तब अपने यहाँ किसी को न कहने का प्रतिबंध लगाया जाता है। इसका और कोई कारण नहीं, उस मनगढ़न्त जाल-जंजाल की पोल खुल जाने का भय ही गोपनीयता का प्रतिबंध लगाता है। साधना विधियों की बहुलता और गोपनीयता की इस अराजकता के दिनों किसी सहज जिज्ञासु के लिए यह निर्णय करना कठिन पड़ता है कि इन तथाकथित गुरुजनों द्वारा बताई जाने वाली अनेकानेक उपासना विधियों में से किसे अपनाए, किसे छोड़े। भ्रांतियों, शंकाओं, संदेहों और अनिश्चित दिशाधारा की मनःस्थिति साधक की निष्ठा में सबसे बड़ी बाधा है। इसके रहते किसी का अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचना कठिन है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस कठिनाई के निवारण का प्राण-पण से प्रयत्न किया गया है और शास्त्र तथा आप्त-परंपराओं का लंबे समय तक पर्यवेक्षण करने के उपरांत वह राजमार्ग प्रस्तुत किया है, जिसे चुनौती दे सकना किसी भी तर्क, तथ्य एवं प्रमाणों को मान्यता देने वाले के लिए शक्य नहीं हो सकता। अध्ययन अन्वेषण ही नहीं, अनुभव को भी इस राजमार्ग की उत्कृष्टता के संबंध में प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। साधना से सिद्धि का उपलब्ध होना ही उसके सही होने की सबसे बड़ी साक्षी है। प्राचीनकाल के उदाहरणों पर जिन्हें संदेह हो वे गायत्री युग लाने वाले सूत्र संचालक की निजी साधना और सिद्धि का पर्यवेक्षण करते हुए भी प्रतिपादन की प्रामाणिकता का पता लगा सकते हैं। संदेह निवारण की दृष्टि से यह साक्षी काफी वजनदार है।

आत्मिक प्रगति के लिए सुनिश्चित साधना पद्धति में गायत्री के अवलंबन से बढ़कर दूसरा मार्ग नहीं हो सकता, इसे भारतीय धर्मानुयायी क्रमशः अच्छी तरह समझते और अनुभव करते जा रहे हैं। उसके लिए उपयुक्त विधान होना चाहिए, उसकी समुद्र मंथन जैसी लंबी अनुसंधान प्रक्रिया का जो निष्कर्ष नवनीत निकलता है, वह सर्वसाधारण के सामने प्रस्तुत है। गायत्री महाविज्ञान या छोटी पुस्तिकाओं से उसे सरलतापूर्वक देखा, समझा जा सकता है। अब तो उनका प्रचलन भी इतना हो गया कि किसी नैष्ठिक साधक से पूछकर निर्भ्रांत साधना पद्धति को जाना सकता है। कोई संदेह हो तो हरिद्वार, मथुरा के केंद्र उसका निराकरण समाधान करने के लिए विद्यमान हैं। ऐसी दशा में साधना से सिद्धि प्राप्त करने के मार्ग में जो प्रथम अवरोध सही मार्गदर्शन न मिलने का—सही अध्यापक अध्यापन न मिलने का था, उसका समाधान मिल गया ही समझा जा सकता है।

मार्गदर्शन के अतिरिक्त प्रगति पथ पर अग्रसर होने का दूसरा अवंलबंन है पुरुषार्थ। पुरुषार्थ के दो पक्ष हैं एक श्रम, दूसरा मनोयोग। श्रम में स्फूर्ति और तत्परता होनी चाहिए। मनोयोग में तन्मयता, निष्ठा का समावेश होना चाहिए। अन्यथा इन दोनों का स्तर नहीं बनता और चिन्ह-पूजा होने जैसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थिति बनी रहती है। लकीर पीटते रहने को पुरुषार्थ नहीं बेगार भुगतना कहा जाता है। उसका प्रतिफल भी नगण्य ही मिलता है। साधना के क्षेत्र में भी उच्चस्तरीय पुरुषार्थ चाहिए। साधक की उपासना में सघन श्रद्धा और जीवन प्रक्रिया में उत्कृष्टता का अधिकाधिक समन्वय होना चाहिए। भजन-पूजन बेगार भुगतने की तरह क्रिया-कृत्य बनकर ही नहीं चलते रहना चाहिए वरन् उसमें सघन निष्ठा का समावेश होना चाहिए।

साधनात्मक पुरुषार्थ में (१) उपासना का नियमित और निश्चित होना (२) व्यक्तित्व में पवित्रता एवं प्रखरता का समावेश बढ़ना। (३)तपश्चर्या की—संयम एवं सेवा शर्तों को पूरा किया जाना—ये तीन चरण हैं। साधक इन्हीं के सहारे इतना सशक्त बनता है कि अंतराल से सिद्धियों का उभार—संसार से सम्मान, सहयोग और अदृश्य जगत से दैवी अनुग्रह की विद्युत वर्षा होने लगे। उपासना में सप्ताह में एक दिन अस्वाद ब्रह्मचर्य एवं मौन की संयम साधना पर जोर दिया गया है। साथ ही नवसृजन के लिए अंशदान की उदारता बरतने में निष्ठावान रहना चाहिए। इन्हें तपश्चर्या की नीति अपनाने का अंगुलि निर्देशन समझा जाना चाहिए। इन्हें मात्र कृत्य की तरह पूरा भर नहीं कर लिया जाना चाहिए, वरन् उन्हें तपस्वी जीवन के आधारभूत सिद्धांत समझा जाना चाहिए और निरंतर यह प्रयत्न चलना चाहिए कि यह आदर्श व्यक्तित्व के अंग बनकर दबे देवत्व को उभारने का चमत्कार दिखा सकें।

अध्यात्म क्षेत्र का आत्म-शोधन एंव आत्म-परिष्कार करना ही परम पुरुषार्थ है। इसी के लिए व्रत-संयम, तप के विभिन्न अनुशासन अपनाने पड़ते हैं। उपासना पद्धति में भी निष्ठा और नियमितता का अधिकाधिक समावेश करना पड़ता है। जो इन तथ्यों पर जितना अधिक ध्यान देता है वह उसी अनुपात से सच्चा साधक माना जाता है और उसी परिमाण से चमत्कारी सिद्धियाँ प्राप्त करता है। जो उस ओर ध्यान नहीं देते मात्र उपासना कृत्यों को ही सब कुछ मान बैठते हैं उनको बाल बुद्धि की जादूगरी में रस लेने वाला ही कहा जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री परिवार के परिजनों ने अपनी साधना में निष्ठा का समावेश करने का प्रयत्न सदा से किया है, अब युग संधि की बेला में वे इस प्रयास को और भी अधिक तत्परता के साथ संपन्न करने जा रहे हैं। इन दिनों जाग्रत आत्माओं के कंधों पर जो विशिष्ट उत्तरदायित्व आए हैं, उनका निर्वाह कर सकने में नैष्ठिक साधना अपनाने पर बहुत जोर दिया जा रहा है। जो इस दिशा में जितने शौर्य पराक्रम कर सकेंगे वे उतने बड़े पुरुषार्थी कहे जाएँगे और आत्मिक प्रगति के सुनिश्चित परिणाम उत्पन्न करने वाले त्रिविध अवलंबनों में से एक अति महत्त्वपूर्ण पक्ष की पूर्ति करेंगे।

भौतिक प्रगति एवं समृद्धि का जितना महत्त्व समझा और ध्यान दिया जाता है उतना ही यदि आत्मिक क्षेत्र की उपलब्धियों के संबंध में दृष्टि रही होती तो निश्चय ही सामान्य परिस्थितियों में रहने वाले व्यक्ति भी देवमानवों की भूमिका निभा सकने में समर्थ हो सके होते; किंतु होता यह है कि भौतिक सफलताओं के लिए छुट-पुट आध्यात्मिक उपचार उपेक्षापूर्वक किए जाते हैं, यदि आत्मबोध उगा और तत्त्वज्ञान जगा होता तो आत्मिक प्रगति को प्रमुखता मिलती और भौतिक सुविधाओं की वैसी ही उपेक्षा बन पड़ती जैसी कि इन दिनों वैभव के निमित्त जीवनोद्देश्य की अवज्ञा होती रहती है। यह आंतरिक परिवर्तन प्रस्तुत कर सकना ही सच्चे अर्थों में आत्मिक क्षेत्र का पुरुषार्थ है, जो इसे जिस मात्रा में कर पाता है वह इसी काय-कलेवर में रहते हुए अपने में दैवी विशिष्टता का अनुभव करता और परिचय देता है।

आत्मिक प्रगति का तीसरा अवलंबन है—वरिष्ठों का अनुदान। छात्र की सफलता का उदाहरण देते हुए कहा जा चुका है कि उसे अभिभावकों का बहुमुखी सहयोग मिलना चाहिए। भोजन, वस्त्र, पुस्तक, फीस, जेब खर्च आदि का सारा प्रबंध अभिभावक करते हैं। यदि वे न करें और यह सारा प्रबंध छात्र को स्वंय ही करना पड़े तो अधिकांश क्षमता उसी को जुटाने में नष्ट हो जाएगी और फिर न पढ़ने के लिए फुरसत मिलेगी, न ताजगी रहेगी। ऐसी दशा में अत्यधिक भार बढ़ जाने से न उसकी पढ़ाई ठीक प्रकार चलेगी, न सफलता ही सुनिश्चित रहेगी। छोटे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बच्चे को माता दूध पिलाती है और उसकी अन्य सुविधाओं को भी जुटाती रहती है। यदि यह लाभ न मिले तो नवजात शिशु के लिए अपनी स्वल्प सामर्थ्य के बल पर जीवन धारण किए रहना भी कठिन हो जाएगा।

आत्मिक प्रगति के क्षेत्र में भी यही सिद्धांत काम करता है। साधना के प्रति सच्चे अर्थों में जो निष्ठावान हैं, उन्हें सिद्ध पुरुषों के उच्चस्तरीय अनुदान मिलते हैं और वे स्वल्प पुरुषार्थ में भी उच्चस्तरीय सफलताएँ प्राप्त कर सकने में सफल होते हैं। विवेकानंद को परमहंस का, शिवाजी को समर्थ का, चंद्रगुप्त को चाणक्य का, विनोबा को गाँधी का अनुदान मिला और वे मूलत: अकिंचन होते हुए भी अंतत: महान बन सकने में सफल हुए। हनुमान, अंगद और नल-नील को चमत्कारी उपलब्धियाँ उनकी अपनी उपार्जित नहीं थीं, वे अनुदान में मिली थीं। कुंती-पुत्र पांडव जो पराक्रम दिखा सके वह उनका निज का नहीं, देव प्रदत्त था। गंगा लाए तो भागीरथ ही थे, पर उस सफलता में उन्हें शिवजी का अनुदान कम नहीं मिला था। तपश्चर्याएँ ऐसे ही अनुदान वरदान प्राप्त करने के निमित्त की जाती हैं।

गुरु और शिक्षक में नैतिक अंतर है। शिक्षक मार्गदर्शक भर होता है। बताने पढ़ाने के उपरांत उसकी जिम्मेदारी पूर्ण हो जाती है; किंतु गुरु की गरिमा इतनी सीमित नहीं है, उसे शिष्य को प्रशिक्षण से भी अधिक अनुदान देना पड़ता है। अध्यापक कोई भी हो सकता है, पर अनुदान देने वाले अभिभावक तो भाग्यवानों को ही मिलते हैं। यदि यह आवश्यकता पूर्ण न हो सके तो मार्गदर्शन और पुरुषार्थ के दोनों आधार बन पड़ने पर भी एक बड़े महत्त्व का अवलंबन अनुपलब्ध ही रह जाता है और उच्चस्तरीय सफलता संदिग्ध बनकर रह जाती है।

कई व्यक्ति ऐसे सिद्ध पुरुषों की तलाश में रहते हैं जिनके वरदान, आशीर्वाद से उनकी कठिनाई का हल निकले एवं अभीष्ट सफलताओं में सरलता हो सके। ऐसे सिद्ध पुरुष प्राचीनकाल में तो बहुत थे, पर अब भी उनका वंश नष्ट नहीं हुआ है। सत्पात्रों को उनकी सेवा सहायता अभी भी प्राचीनकाल की तरह उपलब्ध होती है। फिर क्या कारण है कि प्राचीनकाल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में साधकों को ऐसे अनुदान मिलते रहते थे और अब वैसे सुयोग नहीं बनते। सिद्ध पुरुषों के वरदान प्राप्त करके जो गुरु की कृपा की सराहना कर सकें ऐसे भाग्यशाली कठिनाई से ही कहीं दीखते हैं। इच्छुकों की कमी नहीं, वे भाग-दौड़ भी कम नहीं करते—फिर भी जब निराशा हाथ लगती है तो अनेक प्रकार के संदेह मन में उठते हैं। उनमें एक यह भी है कि सिद्ध पुरुषों की समाप्ति तो नहीं हो गई अथवा वे अनुदार तो नहीं बन गए?

इस शंका के समाधान में इस तथ्य को भली प्रकार उजागर करना होगा कि महत्त्वपूर्ण अनुदान पात्रता के स्तर से संबंधित हैं। पानी माँगने पर कहीं से भी मिल सकता है। मनुष्यता का तकाजा एक दूसरे को सहयोग देते हुए जीवनयापन करने का है, पर बड़ी सहायता देने जैसे बड़े कदम उठाने के लिए कोई तभी तैयार होता है जब प्राप्त करने की पात्रता परख ली जाए। उदाहरण के लिए किसी के भी माँगने पर उसे बेटी नहीं दी जा सकती। जमाता को हर तरह ठोक-बजाकर देखना पड़ता है कि वह उसकी सुयोग्य बेटी के उपयुक्त है या नहीं। बड़े अनुदान मिलते तो मुफ्त में ही हैं, पर उसके लिए पात्रता की कड़ी परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ता है। माँगते ही मिल जाने की कोई परंपरा इस संसार में नहीं है। देवता या सिद्ध पुरुष भी इसके लिए तैयार नहीं होते। याचना पूरी हो ही जाएगी इसकी कोई गारंटी नहीं। बैंकों से मुफ्त में धन लेकर सभी चैक भुनाने वाले निकलते हैं, पर इस लाभ को पाने से पूर्व अपनी जमा राशि अथवा लौटाने की जमानत का प्रबंध करना होता है। हर किसी की मनोकामना पूरी करने वाले अनुदान बँटने लगें तो बैंकें ही नहीं, देवता एवं सिद्ध पुरुष भी दिवालिया बन जाएँगे। पात्रता की कसौटी पर खोटे सिद्ध होने वाले याचकों को प्रायः खाली ही लौटना पड़ता है। ठीक यही बात देव मानवों द्वारा सामान्य-जनों को उपयोगी अनुदान देते समय भी ऐसी जाँच पड़ताल करनी होती है और वैसी ही नीति बरती जाती है।

❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपासना का प्रयोजन और मूल-भूत आधार

उपासना का अर्थ है—समीपता। ईश्वर और जीव में यों समीपता ही है। जब भगवान कण-कण में संव्याप्त हैं तब मानवी काया एवं चेतना में भी समाए हुए क्यों न होंगे। जो अपने में ओत-प्रोत ही है वह दूर कैसे? और जो दूर नहीं है उसकी समीपता का क्या अर्थ है? इस असमंजस की विवेचना इस प्रकार होती है कि समीपता उथली है गहरी नहीं। माना कि शरीर में हलचलों के रूप में और मन में चिंतन के रूप में विश्वव्यापी चेतना ही काम कर रही है तो स्पष्ट है जीव की आस्थाएँ एवं आकांक्षाएँ दिव्य सत्ता के अनुरूप नहीं है उसमें निकृष्टता का आसुरी अंश ही भरा पड़ा है, मनुष्य की सार्थकता तभी है जब उसका स्वरूप एवं स्तर भी उसी के अनुरूप ऊँचा उठ सके। निम्न योनियों के जीवधारी पेट और प्रजनन के लिए जीते हैं। स्वार्थ सिद्धि ही उनकी नीति होती है। शरीर गत लाभ ही उनके प्रेरणा स्रोत होते हैं। दूसरों के साथ आत्मभाव बहुत थोड़ी मात्रा में मिला पाते हैं और परमार्थ परायणता के अंश नगण्य जितने ही देखे जाते हैं। यदि यही अंत: स्थिति मनुष्य की भी बनी रहे तो समझना चाहिए कायिक विकास ही हुआ—चेतनात्मक नहीं। नर-कीट, नर-पशु उन्हें कहते हैं जो शरीर संरचना भर से मनुष्य हैं, उनके दृष्टिकोण में पिछड़ी योनियों जैसी निकृष्ट स्वार्थपरता ही भरी पड़ी है। आयु की दृष्टि से प्रौढ़ हो जाने पर भी यदि सारा आचार व्यवहार बच्चे जैसा ही बना रहे तो उस अविकसित स्थिति पर चिंता व्यक्त की जाएगी। ठीक यही स्थिति उन मनुष्यों की है जो शरीर से तो इस सुरदुर्लभ काया में प्रवेश पा गए पर उनने अपने दृष्टिकोण में, क्रिया-कलाप में वही पिछड़ा हुआ क्रिया-कलाप सँजोए रखा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस दयनीय स्थिति से पीछा छुड़ाने के लिए ईश्वर की समीपता का, उपासना का, उपक्रम बनाना पड़ता है। शरीर ठंड से काँप रहा हो तो आग की समीपता से आवश्यक गर्मी प्राप्त की जाती है। आदर्शवादिता से रहित मानव जीवन घिनौना ही कहा जाएगा। जो पशु के लिए क्षम्य है वही मनुष्य के लिए अक्षम्य। पशु निर्वसन रहते, खुले में मलमूत्र त्यागते और रति कर्म करते हैं। मनुष्य वैसा करेगा तो भर्त्सना का पात्र बनेगा। शिश्नोदर परायणता निकृष्ट कृमि-कीटकों के लिए स्वाभाविक हो सकती है, मनुष्य के लिए तो वह स्थिति निंदनीय ही मानी जाएगी।

संगति का-समीपता का-प्रभाव सर्वविदित है। चंदन के समीप उगे हुए झाड़-झंखाड़ सुगंधित हो जाते हैं, कोयले की और गंधी की दुकान पर बैठने वाले कालोंच का धब्बा और सुगंध का छींटा साथ लेकर जाते हैं। दुष्टों की समीपता से दुर्गति और सज्जनों के सान्निध्य से सद्गुणों की वृद्धि और प्रगति की संभावना का साकार होना सर्वविदित है। ईश्वर उत्कृष्टताओं का भंडार है। उसकी समीपता—उपासना से वैसी ही विशेषताओं का बढ़ना स्वाभाविक है। कीट भृंग का उदाहरण प्रसिद्ध है। टिड्डे हरी घास में रहते हैं तो उनका शरीर हरा रहता है, पर जब वे सूखी घास में रहने लगते हैं तो पीले पड़ जाते हैं। तितलियाँ फूलों के अनुरूप अपने रंग बदलती रहती हैं। समीपता के अनुरूप ढलने के अगणित उदाहरण सर्वत्र पाते हैं। वातावरण की प्रभाव शक्ति को कौन नहीं जनता। व्यक्तियों का भला बुरा निर्माण करने में वातावरण की असाधारण भूमिका रहती है।

उपासना का क्रिया-कृत्य अंतरंग और बहिरंग स्तर पर ऐसा बनना चाहिए जिससे व्यक्ति के भावनात्मक स्तर में उत्कृष्टता की अभिवृद्धि होती हो। बहिरंग वातावरण बनाने में पूजा उपासना में प्रयुक्त होने वाली प्रतीक प्रतिमा—उसका शृंगार, पूजा उपचार में प्रयुक्त होने वाले पदार्थ व उपकरण आदि का मिला जुला स्वरूप अपना काम करता है, पूजा वेदी के समीप बैठने पर ऐसा लगना चाहिए मानो किन्हीं असाधारण दिव्य परिस्थितियों में जा पहुँचे। मंदिर, देवालय, पूजाग्रह, देवपीठ, आराधना कक्ष को बनाने में उपयुक्त वातावरण बनाने का तथ्य ही प्रधान रूप से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काम करता है। वहाँ के सुसज्जा साधन सँजोने में इसी बात का ध्यान रखा जाता है कि उस स्थान में जाते ही मन अपने आपको पवित्रता की दिव्य परिस्थितियों से घिरा हुआ अनुभव करने लगे। सामान्य वातावरण से उपासना कक्ष का वातावरण भिन्न रखा जाता है और वहाँ की परिस्थितियाँ ऐसी बनाई जाती हैं जिनमें बैठने पर उत्कृष्टता की अनुभूति बढ़ने से सुविधा मिल सके।

उपासना का दूसरा आधार कर्मकांडों का क्रिया-कृत्य और तीसरा आधार भावना क्षेत्र में दिव्य उभार उत्पन्न करना होता है। ये दोनों ही आधार अपने आप में अति महत्त्वपूर्ण हैं। उनसे चेतना को बदलने एवं ढालने में असाधारण सहायता मिलती है।

कर्मकांड वे कृत्य हैं जो शरीर के विभिन्न अवयवों की सहायता से उपचार उपकरणों के द्वारा संपन्न किए जाते हैं। षोडसोपचार—देव पूजन, आत्मशोधन के विभिन्न क्रिया-कृत्य इसी श्रेणी में आते हैं। मन पर छाप डालने में विचार और कर्म का समन्वय करना पड़ता है। चित्त पर स्थिर संस्कार डालने के लिए अभीष्ट विचारों के साथ-साथ उनके पूरक कृत्य होने ही चाहिए अन्यथा कल्पना केवल कल्पना बनकर हवा में उड़ जाती है। विचारणा के साथ क्रिया का समन्वय न कर सकने पर भी जो लोग सफलताएँ चाहते हैं, उन्हें शेखचिल्ली कहकर उपहासास्पद किया जाता है। हर क्षेत्र में विचार और कर्म का समन्वय ही प्रतिफल उत्पन्न करता है। उपासना में ईश्वरीय सान्निध्य की कल्पना ही नहीं अनुभूति भी उपेक्षित होती है। भाव-निष्ठा को कार्यान्वित होते देख कर ही ऐसी मन:स्थिति बनती है। इसलिए यह सोचना होता है कि परमेश्वर प्रत्यक्ष ही, सचमुच ही सामने विराजमान है और उनकी किसी जीवित व्यक्ति के उपस्थित होने पर की जाने जैसी अभ्यर्थना की जा रही है। आत्मशोधन और देवपूजन के दोनों ही कृत्यों में इसी प्रकार का भाव समन्वय होता है। वह यदि बेगार भुगतने के उथले मन से किया गया है और जैसे-तैसे परंपरागत लकीर पीटी गई हो तो बात दूसरी है अन्यथा जिस प्रयोजन के लिए यह प्रचलन हुआ है, उसे ध्यान में रख कर चला जाए तो अंत:क्षेत्र में अभीष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निष्ठा होगी और लगेगा कि निराकार परमेश्वर अपेक्षाकृत अधिक सघन-अधिक साकार-बन कर सामने आया है।

उपासना का तीसरा प्रयोजन है मनःक्षेत्र पर ईश्वरीय सान्निध्य का चिंतन घटाटोप की तरह छाए रहना। सामान्य जीवन में आत्मसत्ता शरीर रूप में ही काम करती है अस्तु अपना शरीर मात्र ही अनुभव होने लगता है। शरीर से संबंधित समस्याओं का विस्तार अत्यधिक है। उनके खट्टे मीठे स्वाद भी चित्र-विचित्र हैं और वे सभी बड़े आकर्षक हैं। यों प्रिय अप्रिय स्तर की परस्पर विरोधी अनुभूतियाँ सामने आती हैं, पर वे दोनों ही अपने-अपने ढंग के गहरे प्रभाव चेतना पर छोड़ती हैं। सफलताएँ अपने ढंग का प्रभाव डालती हैं, असफलताएँ दूसरे ढंग का, लाभ में एक प्रकार का अनुभव होता है, हानि में दूसरे तरह का। एक स्थिति प्रिय लगती है, दूसरी अप्रिय। इतना होते हुए भी दोनों स्थितियों की गहरी छाप पड़ती है, सफलता का हर्षोल्लास और असफलता का शोक संताप दोनों ही अपने प्रभाव छोड़ते और चेतना को आवेगग्रस्त बनाते हैं। ज्वार भाटे जैसे—ये आवेश अवसाद सामयिक अनुभूति बनकर ही समाप्त नहीं हो जाते वरन् पीछे भी बहुत समय तक उनकी उत्तेजित प्रतिक्रिया बनी रहती है। ऐसे क्षण भी कम आते हैं जिनमें चित्त शांत संतुलित रहता हो और आत्म सत्ता के साथ जुड़ी हुई समस्याओं को हल करने की बात सूझ पड़ती हो। यही कारण है कि हम भौतिक आवश्यकता और समस्याओं को ही सब कुछ मान लेते हैं और उन्हीं के जाल-जंजाल में उलझे जकड़े पड़े रहते हैं। आत्मिक जीवन का स्वरूप भी सामने नहीं आ पाता फिर उनका समाधान सूझे तो कैसे? स्पष्ट है कि आत्मिक समस्याओं का समाधान हुए बिना न तो भौतिक जीवन का रस लिया जा सकता है और न जीवन लक्ष्य को पूरा करने की बात बनती है।

आवश्यक है कि कुछ समय हमारे पास ऐसा हो जिसमें भौतिक जीवन को एक प्रकार से पूरी तरह ही भुला दिया जाए और उन क्षणों में केवल आत्मा का स्वरूप, जीवन लक्ष्य एवं परमात्म सान्निध्य के अतिरिक्त और कुछ सूझ ही न पड़े। यही उपासना काल है। यह सही हुई या गलत,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसकी पहचान इतनी ही है कि उन क्षणों में मन:क्षेत्र पर आत्मिक स्तर का चिंतन छाया रहा या भौतिक स्तर का। यदि सांसारिक मनोकामनाओं की उथल-पुथल मची हुई है और इष्टदेव से तरह-तरह के भौतिक वरदान पाने की ललक उठ रही हो, तो समझना चाहिए कि यह उपासना कृत्य भी विशुद्ध रूप से भौतिक है। इससे आत्मिक प्रगति जैसा कोई लाभ मिल नहीं सकेगा। यदि उतने समय शरीर रहित—भौतिक प्रभावों से मुक्त—ज्योतिर्मय आत्मा ही ध्यान में है और उसमें महाज्योति के साथ समन्वित हो जाने की दीप पतंग जैसी आकांक्षा उठ रही है, तो समझना चाहिए कि उपासना का सच्चा स्वरूप अपना लिया गया और उससे अभीष्ट उद्देश्य पूरा हो सकने की संभावना बन रही है।

उपासना के समय सांसारिक विचार न आएँ इसका एक ही उपाय है कि उन क्षणों के लिए एक निर्धारित विचार पद्धति सामने रहे। वह भी दृश्य मुक्त-आकर्षक स्तर की ऐसी हो जो मन को अपने शिकंजे में पकड़े रहे यह वैज्ञानिकों जैसे गहरे चिंतन से भी हो सकता है, पर वैसा बहुत समय के अभ्यास और एकाग्र एकात्म स्तर मिल जाने पर ही संभव है। आरंभ में दृश्य मुक्त चिंतन मन:क्षेत्र पर छाया रहे ऐसा ही अभ्यास लेकर चलना चाहिए। 'ध्यान' इसी को कहते हैं। उपासना में ध्यान अनिवार्य है। यदि उसे छोड़ कर मात्र क्रिया-कृत्य ही किए जा रहे होंगे तो मन इधर-उधर भागता रहेगा और अधूरा कर्म ही पूजा-पाठ के नाम पर अपनी लंगड़ी-लूली गाड़ी घसीट रहा होगा।

ध्यान साकार और निराकार दो प्रकार के कहे गए हैं। एक में भगवान की अमुक मनुष्याकृति को मानकर चला जाता है दूसरे में प्रकाश पुंज की आस्था जमाई जाती है। तात्त्विक दृष्टि से ये दोनों ही साकार हैं। सूर्य जैसे बड़े और प्रकाश बिंदु जैसे छोटे आकार का ध्यान रखना भी तो एक प्रकार का आकार ही है, अंतर इतना ही तो हुआ कि उसकी मनुष्य जैसी 'आकृति नहीं है। ध्यान के लिए ईश्वर की—परम लक्ष्य की आकृति बनना आवश्यक है। यों नादयोग, स्पर्शयोग, गंधयोग को आकृति रहित कहा जाता है, पर ऐसा सोचना अनुपयुक्त है। नादयोग में शंख, घंटा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घड़ियाल, वीणा आदि की ध्वनियाँ सुनी जाती हैं, पर अनचाहे ही वे वाद्य यंत्र कल्पना में आते रहते हैं जिनसे वे ध्वनियाँ निसृत होती हैं। इस प्रकार गंध ध्यान में मात्र गंध पर ही चिंतन एकाग्र नहीं हो सकता, जिस पुष्प की वह गंध है उसकी आकृति भी अनचाहे ही सामने आती रहेगी। ध्यान में आकृति से पीछा नहीं छूट सकता। मस्तिष्क की बनावट ही ऐसी है कि वह निराकार कहलाने वाले चिंतन को भी आकृतियाँ बनाकर ही आगे चलता है। वैज्ञानिकों के गहरे चिंतन को निराकार कहा जाता है, पर वस्तुत: वह भी जो सोचता है उसमें कल्पना क्षेत्र की एक पूरी प्रयोगशाला सामने रहती है और प्रयोगात्मक हलचलें आँधी तूफान की तरह अपना काम कर रही होती हैं। अंतर इतना ही होता है कि वह स्थूल प्रयोगशाला के उपकरण छोड़कर वही सारा प्रयोग कृत्य काल्पनिक प्रयोगशाला में कर रहा होता है, ध्यान में आकृति से पीछा छुड़ाना संभव नहीं हो सकता, अस्तु किसी को साकार निराकार के वितंडावाद में न पड़कर ध्यान धारणा के सहारे आत्म चिंतन का प्रयोजन पूरा करना चाहिए।'

ईश्वर का आकृति समेत ध्यान करना अभीष्ट हो तो उन्हें नर या नारी की सुंदरतम प्रतिमा के रूप में इष्टदेव मानना चाहिए और उनके पीछे कोई इतिहास न जोड़कर उत्कृष्टतम सद्गुणो की पूर्ण प्रतिमा अनुभव करना चाहिए। इसे अन्य देवता से भिन्न नहीं वरन् समन्वित सत्ता मानना चाहिए। एक ही ब्रह्म को अनेक रूपों में कहा गया है। यह उक्ति बहुदेववाद को तो मानती है, पर उनकी पृथकता अस्वीकार करती है। शंकर, दुर्गा, हनुमान, गणेश, सूर्य, राम, कृष्ण, सरस्वती, लक्ष्मी, गायत्री आदि की कोई भी प्रिय आकृति साकार ध्यान के लिए चुनी जा सकती है, पर यह नहीं सोचा जाना चाहिए कि यह अन्य किसी देव सत्ता से भिन्न है। एक ही मनुष्य के अनेक चित्र, पोज या संबोधन हो सकते हैं, ठीक इसी प्रकार विश्व में एक ही संव्याप्त चेतना के अनेक नाम रूप रखे जा सकते हैं, पर किसी आकृति को दूसरी आकृतियों से भिन्न नहीं माना जा सकता। इस भिन्नता की मान्यता ने बहु देववाद के साथ अवांछनीय विग्रह उत्पन्न किए हैं और मूल प्रयोजन को ही लड़खड़ा दिया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साकार उपासना में इष्ट देव के समीप अति समीप होने और उनके साथ लिपट जाने—उच्चस्तरीय प्रेम आदान-प्रदान की गहरी कल्पना करनी चाहिए। इसमें भगवान और जीव के बीच माता-पुत्र,पति-पत्नी, सखा-सहोदर, स्वामी-सेवक जैसा कोई भी सघन संबंध माना जा सकता है। इससे आत्मीयता को अधिकाधिक घनिष्ठ बनाने में सहायता मिलती है। लोक व्यवहार में स्वजनों के बीच आदान-प्रदान उपहार और उपचार की तरह चलते हैं। मन, वचन, कर्म से घनिष्ठता एवं प्रसन्नता व्यक्त की जाती है। भेंट उपहार में कई तरह की वस्तुएँ दी जाती हैं। नवधा भक्ति में ऐसे ही आदान-प्रदान की वस्तुपरक अथवा क्रियापरक कल्पना की गई है। वस्तुत: यहाँ प्रतीकों को माध्यम बनाकर भावनात्मक आदान-प्रदान की गहराई में जाया जाना चाहिए, भक्त और भगवान के बीच सघन आत्मीयता की अनुभूति उत्पन्न करने वाला आदान-प्रदान चलना चाहिए। भक्त अपनी अहंता को क्रिया, विचारणा, भावना एवं संपत्ति को भगवान के चरणों पर अर्पित करते हुए सोचता है, यह सारा वैभव उसी दिव्यसत्ता की धरोहर है। इसका उपयोग व्यक्तिगत वासना, तृष्णा के लिए—ईश्वरीय प्रयोजनों के लिए किया जाता है। वह स्वयं तो मात्र खजांची-स्टोरकीपर भर है।

ध्यान का एक मात्र उद्देश्य भगवान और भक्त के बीच एकात्म भाव की स्थापना करना है, मात्र किसी आकृति का ध्यान चित्र देखते भर रहने से काम नहीं चलता। भक्त अपने स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों को—क्रिया, विचारणा और भावना को ईश्वर अर्पण करके उसे मात्र दिव्य प्रयोजनों में नियोजित रखने का संकल्प सघन करता है। इसके साथ-साथ भौतिक धन-संपत्ति तो अर्पित हो ही जाती है। समर्पण का तात्पर्य है—व्यक्तिगत-भौतिक महत्त्वाकाँक्षाओं की समाप्ति और उसके स्थान पर ईश्वर इच्छा की, उच्च आदर्शों की अपने ऊपर नियंत्रण करने वाली स्थापना। इसी मान्यता को अंत:करण में यथार्थवादी निष्ठा के साथ स्थापित करने को आत्मसमर्पण कहते हैं। ध्यान के द्वारा इसी निष्ठा को परिपक्व किया जाता है।

भक्त का समर्पण, बदले में भगवान का अनुग्रह आश्वासन। इसी के तरह-तरह के लौकिक स्वरूप चित्र कल्पित किए जा सकते हैं। साकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्यान में अपनी रुचि की कल्पनाएँ करते रहने और उसे दृश्यावली में डूबे रहने की पूरी छूट है। ध्यान की एकाग्रता इसी सीमा तक है कि उसमें भक्त और भगवान के बीच होने वाले आदान-प्रदान की कल्पनाएँ ही चलनी चाहिए, भौतिक लाभ या प्रयोजन आड़े नहीं आने चाहिए । पूर्ण एकाग्रता जिसे शून्यावस्था, योगनिष्ठा या समाधि कहते हैं, बहुत ऊँची स्थिति है। मन कहीं जाए ही नहीं एक बिंदु पर केंद्रित रहे ऐसा हो सकने को ही तुरीयावस्था या समाधि कहते हैं। यह आरंभिक साधना में लगभग असंभव ही है, उसकी बात नहीं सोची जानी चाहिए। ध्यान साधना का व्यावहारिक रूप इतना ही है कि भक्त और भगवान के बीच उच्चस्तरीय आदान-प्रदान चलना चाहिए। भक्त अपनी समस्त आंकाक्षाओं और संपदाओं को ईश्वर के लिए समर्पित करता है और इसके बदले में वह सब कुछ पाता है जो ईश्वर स्वयं है। मनुष्य को संतुष्ट करने वाली ईश्वरीय सत्ता अपनी अनुभूति आनंद और उल्लास के रूप में छोड़ती है। भगवान से मिला या नहीं इसकी परख इस रूप में की जा सकती है कि उल्लास-आदर्शवादिता के प्रति उत्कंठा भरा उभार अंत:करण में उमंगना आरंभ हुआ या नहीं। सद्भावना और सत्प्रवृत्ति अपनाने वाले को सहज ही मिलते रहने वाला आत्मसंतोष आनंद अनुभव में आता है या नहीं।

ईश्वर दर्शन के संबंध में यह भ्रांत धारणा निरस्त की जानी चाहिए कि सपने में या जागृति में इष्टदेव की किसी आकृति की झाँकी मिलती है अथवा प्रकाश आदि दीखने जैसा कोई चित्र-विचित्र दृश्य दिखाई पड़ता है। यदि ऐसा किसी को होता हो तो उसे झाड़ी का भूत, रस्सी का साँप दीखने की तरह अपने संकल्पों की मानसिक प्रतिक्रिया भर समझना चाहिए। जब चेतना की कोई आकृति हो ही नहीं सकती तो फिर उसका निर्भ्रान्त दृश्य दिखाई ही कैसे दे सकता है? इस तथ्य को हजार बार हृदयंगम कर लिया जाना चाहिए कि ईश्वर का जीवन में समावेश आदर्शवादी आकांक्षाएँ प्राणप्रिय प्रतीत होने लगने और तदनुरूप गतिविधियाँ अपनाने पर मिलने वाले आनंद उल्लास की अनुभूति का स्तर ही ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र प्रमाण है। ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भ्रांतियों से बचें, सही पथ पर चलें

आत्मिशक्ति एक ऐसी दिव्य विभूति है, सामर्थ्यों का भांडागार है, जो प्रसुप्त चेतना को जगाती एवं मानव में देवत्व का उदय सार्थक कर दिखाती है। इसी जीवन में मुक्ति का परमानंद प्राप्त कराने वाली इस प्रसुप्त सामर्थ्य से बहुसंख्यक व्यक्ति अनभिज्ञ ही बने रहे हैं। आत्मशक्ति प्राप्त करने के लिए जो साधना करनी पड़ती है उसके दो पक्ष हैं—एक क्रिया-कांड, भजन-पूजन का उपचार। दूसरा ब्रह्मांडीय चेतना के, उत्कृष्टता के, देवत्व के साथ योग एकात्म। उपचारों में जप, भजन, व्रत, उपवास जैसे शरीर साध्य कृत्य करने पड़ते हैं। योग भावना प्रधान है उसमें समर्पण की भाव-श्रद्धा जगानी पड़ती है। भक्ति का, प्रेम का अभ्यास करना और स्वभाव बनाना पड़ता है। आदर्शों के प्रति समर्पित व्यक्तित्व को योगी कहते हैं जबकि मात्र कर्मकांडों में ही निरत रहने वाले भाव शून्यों को अधिक-से-अधिक पुजारी की संज्ञा दी जा सकती है। उपचारों को तीर और योग एकात्म को धनुष कहते हैं। तीर उतनी ही दूर जाता, उतनी ही चोट करता है, जितना कि प्रत्यंचा का खिंचाव उसे प्रेरणा देता है। धनुष के बिना तीर की कोई चमत्कृति नहीं, किंतु अकेला धनुष किसी छोटे से कंकड़ को फेंककर लगभग तीर लगने जैसा परिणाम उत्पन्न कर सकता है। उपचार का कोई महत्त्व नहीं, सो बात नहीं। लेखक को कलम, दर्जी को सुई, चित्रकार को तूलिका, वादक को वीणा जैसे उपकरणों का सहारा लेना पड़ता है। इतने पर भी उनकी अंत:चेतना का प्रखर प्रवीण होना आवश्यक हैं अथवा वे उपकरण हाथ में रहते हुए भी किसी सफलता का श्रेय प्रदान न कर सकेंगे। पूजा परक उपचारों के संबंध में भी वही बात है। वे अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं। उनकी उपेक्षा करने से काम नहीं चलेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हथौड़ी के बिना लुहार, बाजे के बिना वादक अपने कौशल का परिचय कैसे देगा? उस्तरा न हो तो नाई किस प्रकार किसी की हजामत बनाए?

बीज की महत्ता सर्वविदित है। उसके बिना न खेती होती है और न बगीचा लगता है। इतने पर भी मात्र बीज को ही सब कुछ मान बैठने वाले न फसल काट सकते हैं और न फल संपदा के सहारे धनवान बन सकते हैं। बीज बोने की तरह ही खाद पानी का प्रबंध करना आवश्यक है। बीज को उपासना उपचार कह सकते हैं, किंतु उसे लहलहाते पौधे का रूप देने के लिए भाव श्रद्धा का खाद पानी अनिवार्यत: चाहिए। अन्यथा बीज बोने में जो परिश्रम एवं धन खर्चा गया, वह भी बेकार चला जाएगा। यहां उस तथ्य का रहस्योद्घाटन किया जा रहा है जिस पर साधना की सफलता, असफलता का केंद्र-बिंदु निर्धारित है।

'साधना को सिद्धि' के रूप में परिणत होते देखने के इच्छुक प्रत्येक विचारशील को जहाँ निर्धारित पूजा-उपचार नियमित रूप से करने चाहिए, वहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इष्ट के, लक्ष्य के प्रति श्रद्धा का क्रमिक विकास हो रहा है या नहीं? प्राण विहीन शरीर को लाश कहते हैं और आस्था रहित पूजा उपक्रम को विडंबना। दोनों का वाह्य स्वरूप तो सही दीखता है, पर आंतरिक खोखलेपन के कारण उनके सहारे किसी उपलब्धि की आशा नहीं की जा सकती। मृतक के निर्जीव काय कलेवर से किसी को क्या कुछ मिल सकेगा? इसी प्रकार भाव-श्रद्धा से रहित पूजा के परिश्रम से इतना ही लाभ हो सकता है कि उक्त समय किसी दुष्कर्म में न लगकर सत्प्रयोजन के अभ्यास में व्यतीत हुआ। इतने पर भी उससे किसी चमत्कारी प्रतिफल की आशा अपेक्षा नहीं की जा सकती। प्रत्येक तथ्यान्वेषी साधक को जितना परिश्रम, उपासना, उपचार पर करना होता है, उससे कहीं अधिक प्रयास अपनी भाव-चेतना में उत्कृष्टता का समावेश करने के लिए करना होता है। यह मरुस्थल को सुरम्य उद्यान में बदलने जैसा परम पुरुषार्थ है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कई भ्रांतिग्रस्त व्यक्ति मात्र पूजा-उपचार के कर्मकांडों को ही ऋद्धि-सिद्धि का भांडागार मान बैठते हैं और बाजीगरों द्वारा तुर्त-फुर्त करतब कौतूहल दिखाए जाने की तरह अपने तंत्र-मंत्र से आकाश, पाताल जैसी कल्पना करने लगते हैं। वे पूरी नहीं होतीं तो नास्तिक जैसा आक्रोश प्रकट करने और उपासना विज्ञान पर चित्र-विचित्र लाँछन लगाते देखे जाते हैं। सभी जानते हैं कि जादूगरी मात्र छलावा है। मिट्टी से रुपया बनाना, हथेली पर सरसों जमाना विज्ञान के सामान्य नियमों से सर्वथा विपरीत है। मिट्टी से रुपया बन तो सकता है, पर उसके लिए किसान, कुम्हार या ईंट पकाने वाले जैसी सुनियोजित प्रक्रिया का सहारा लेना होता है। पूजा उपचार के जादूगरी जैसे परिणाम देखने के लिए आतुर व्यक्ति बालकों जैसी आशा निराशा के झूले में झूलते रहते हैं। अध्यात्म वस्तुतः अंतःचेतना के परिष्कार का एक सुनियोजित विज्ञान है। जो आत्मसत्ता से जिस स्तर की उत्कृष्टता का समावेश कर पाता है, वह उतना ही पवित्र और प्रखर होता जाता है। सभी जानते हैं कि व्यक्तित्व संपन्न व्यक्ति जिस भी क्षेत्र में हाथ डालते हैं, उसी में सफलता पाते हैं। जबकि मंत्र-तंत्र के बाजीगर व्यक्तित्व के सुधार परिष्कार की ओर नजर तक नहीं डालते और मात्र जादुई क्रिया-कृत्यों के सहारे उन सफलताओं को तत्काल उपलब्ध करने की बात सोचते हैं जो अभीष्ट योग्यता एवं तत्परता के मूल्य पर ही खरीदी जा सकती है।

इन दिनों हर क्षेत्र में भ्रांतियों का बाहुल्य है, अध्यात्म का क्षेत्र तो उनसे बुरी तरह भर गया है। आत्म परिष्कार में—व्यक्तित्व निर्माण के उच्चस्तरीय विज्ञान की आज जो दुर्गति हो रही है, उसे देखकर भारी दुःख होता है। उपचार कृत्यों के गुण-दोषों पर विचार पीछे किया जाना चाहिए, पहले यह देखा जाना चाहिए कि अध्यात्म के नाम पर जो मान्यताएँ प्रचलित हैं, वे कहाँ तक सत्य और तथ्य पर आधारित हैं। आज उस आत्म परिष्कार की पुनीत प्रक्रिया को पदच्युत करके बाजीगरों का—उठाईगीरी का—सिद्धांत मान्यता प्राप्त कर चुका है। हर व्यक्ति चित्र-विचित्र कर्मकांडों से जादू भरे चमत्कार और टोकरा भरे आकाश कुसुमों के उपहार पाना चाहता है। यदि उनकी मान्यता सही होती है तो फिर इस विश्व व्यवस्था में कर्मफल, योग्यता एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तत्परता के लिए कोई स्थान शेष न रह जाएगा। तब महत्ती सफलताएँ जादूगरों की पिटारी से ही बिखरती, बरसती पाई जाएँगी।

अध्यात्म निश्चय ही जादू भरा है। संसार के महामानवों के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का इतिहास एवं अनुदान ऐसा गौरवशाली है जिस पर हजारों लाखों जादूगरों को निछावर किया जा सकता है। वैसी ही महत्त्वाकाँक्षा हर सच्चे अध्यात्मवेत्ता को सँजोनी चाहिए। जादू भरे कौतूहलों को देखने की बचकानी ललक को कूड़े के ढेर में बुहार कर फेंक देना चाहिए, साथ ही वह आत्म-तेजस् उभरना चाहिए, जिससे सारे अभ्यस्त कुसंस्कारों में, स्वभाव एवं आदतों में कायाकल्प जैसे परिवर्तन कर सकना शक्य हो सके।

आत्मीयता का विस्तार ही भक्तियोग है। इसके अभ्यास में सर्वत्र अपनापन दीखता है। उदार सेवा सहायता करने को मन करता है। आस्थाएँ उत्कृष्टता के साथ जुड़ी रहने से—अंतरंग में जो उल्लास उमंगता रहता है उसी को अमृत, आत्मदर्शन, ब्रह्म साक्षात्कार आदि का नाम तत्त्वदर्शियों ने दिया है। जीवन मुक्तों की—देव दूतों की ऐसी स्थिति होती है।

ज्ञानयोग उच्चस्तरीय दूरदर्शिता का नाम है। आम आदमी तात्कालिक लाभ को ही सब कुछ मान बैठते हैं और भविष्य की आवश्यकताओं, संभावनाओं पर तनिक भी विचार नहीं करते। यही कारण है कि उनकी बुद्धि विलास संचय एवं अपव्यय के ताने-बाने बुनती रहती है। जिंदगी इस व्यामोह में कट जाती है और जब परिणामों के परिपक्व होने का अवसर सामने आता है, मात्र पाश्चात्ताप ही शेष रहता है। ज्ञान योगी अंधी भेड़ों जैसे लोक प्रवाह को अमान्य ठहराकर अपनी स्वतंत्र विवेक बुद्धि का उपयोग करते हैं और नर पशुओं की तरह नष्ट-भ्रष्ट होने वाले जीवन को नए निर्धारणों के आधार पर देवोपम गतिविधियों के साथ जोड़ देने का पराक्रम प्रकट करते हैं।

कर्मयोगी अपनी क्रिया शक्ति को पेट-प्रजनन से, तृष्णा अहंता की पूर्ति से ऊपर उठाकर उसे आदर्शवादी क्रिया-कलापों में नियोजित करता है। सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धांत ही कर्मयोग का पर्यायवाचक है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो उच्चस्तरीय जीवन जिएगा उसे संयम बरतना पड़ेगा, आवश्यकता और इच्छाएँ घटाकर देशवासियों के औसत स्तर तक नीची लानी पड़ेंगी। इतना बन पड़ने पर ही कोई अपने श्रम, समय, मनोयोग एवं वैभव की बचत करके उच्च विचारों को साकार करने वाले परमार्थ में नियोजित कर सकता है। कर्मयोगी की आंतरिक स्थिति यही होती है।

कर्मयोगी—महामानव बनते हैं। ज्ञानयोगी—ऋषि कहलाते हैं और भक्तियोगी—जीवन मुक्त अवतारी देवदूतों में गिने जाते हैं। मनुष्य के तीन शरीर हैं। स्थूल शरीर को कर्मयोग से, सूक्ष्म शरीर को ज्ञानयोग से एवं कारण शरीर को भक्तियोग से परिष्कृत करते हुए परम लक्ष्य को प्राप्त किया जाता है। यही आत्मिक प्रगति का राजमार्ग है। इसी पर चलते हुए सामान्यों को असामान्य बनने का और युग प्रवाह को उलटने से लेकर समूचे वातावरण में उत्कृष्टता भर देने का सुअवसर मिलता है, उनकी गतिविधियों की परिणति को देखते हुए हर विवेकवान की आँखें उन्हें चमत्कारी सिद्ध पुरुष कहती और शत-शत नमन करती देखी जाती हैं। बचकाने जादू जैसे दृश्य देखने कौतूहल दिखाने के लिए ललकते रहते हैं, पर परिपक्व प्रज्ञा वाले उस ओर नजर उठा कर भी नहीं देखते। उन्हें अपने व्यक्तित्व के परिष्कार में—दृष्टिकोण, रुझान एवं कर्तृत्व की उत्कृष्टता में ऐसे चमत्कारों की भरमार दीखती है जिनके लिए सामान्य नर पामर प्रायः तरसते-तरसते ही मरते हैं।

देव शक्तियों के स्वरूप, स्तर एवं क्रिया-कलाप के संबंध में तथ्य को जितनी जल्दी समझा जा सके उतना ही उत्तम है कि ये चमचागीरी, जीभ की लपलपी, छोटे पुष्प-दीप जैसे उपहारों से प्रभावित होकर किसी को अपना भक्त मान बैठने और उसकी उचित अनुचित कामनाओं की तत्काल पूर्ति में लग जाने वाले नहीं हैं। इस आधार पर उन्हें फुसलाने-बहलाने की तिकड़म बाजी को ही यदि कोई पूजा साधना समझता हो तो इस भ्रम जंजाल में फँसने के उपरांत निराश होने, गाली देने की अपेक्षा यही अच्छा है कि बिना किसी भजन-पूजन के ही काम चलाया जाए। पुरुषार्थ के आधार पर सफलता पाने में नीतिमत्ता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी है और वास्तविकता भी। छुट-पुट जादुई उपचारों के उलटे उस्तरे से देवताओं की हजामत बनाने के धंधे में हाथ डालने की अपेक्षा उसे न करना ही अधिक समझदारी की बात है।

पेड़ों की आकर्षण शक्ति आकाश में उड़ने वाले बादलों को धरती पर उतरने और बरसने के लिए विवश करती है। साधक की चरित्र निष्ठा और समाज निष्ठा का समन्वय ही ऐसी आकर्षण शक्ति का उद्‌भव करता है जो दैवी अनुदानों को साधक पर बरसने के लिए विवश कर सके। अस्तु मनुहार उपहार के लोभ-लालच में दैवी शक्तियों को बहेलियों और मल्लाहों की तरह फँसाने का विचार छोड़कर अपना प्रयास यह होना चाहिए कि अपनी पात्रता किस प्रकार इस स्तर तक विकसित की जाए कि दैवी शक्तियों को बादलों की तरह बरसने के लिए विवश होना पड़े। बर्तन जितने बड़े होते हैं उतना ही पानी उनमें भरा जा सकता है। विपुल जलाशय भी बर्तन की परिधि से अधिक पानी दे सकने में असमर्थ रहते हैं। दैवी शक्तियाँ भी ऐसे ही अनुबंधनों में बँधी हुई हैं।

ईश्वर आदर्शों का समुच्चय है। उपासना का अर्थ होता है—समीप बैठना। समीप बैठना वैसा जैसा कि गीली लकड़ी आग के समीप पहुँचकर अपना गीलापन समाप्त कर लेती है और आग की उष्मा को अपने में धारण करके सूखती चली जाती है। अधिक निकट पहुँचने पर स्वयं आग बन जाती है। उपासना का वास्तविक स्वरूप यही है। महानता की समस्त उत्कृष्टताओं के पुंज परमेश्वर का सान्निध्य प्राप्त करके साधक उसकी गुण-गरिमा को क्रमशः अपने में अधिकाधिक मात्रा में भरता चला जाए। यही दैवी विभूतियाँ व्यक्तित्व को श्रेष्ठ, शालीन, उदार और उदात्त बनाती हैं। कहना न होगा कि व्यक्तित्व संपन्न व्यक्ति एक प्रकार से सिद्ध पुरुष ही होता है। उसका मूल्य हर क्षेत्र में सामान्य नर पशुओं की तुलना में हजारों लाखों गुना अधिक आँका जाता है। तदनुरूप उस पर चारों ओर से सम्मान सहयोग भी बरसता है। जो इस स्तर का—लाभ पा सकेगा उसे स्वभावतः उच्चस्तरीय सफलताएँ भी मिलती चली जाएँगी। ऐसे लोग ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हर क्षेत्र में श्रेय पाते और प्रगति के उच्च शिखर पर जा पहुँचते हैं। इसी सुखद प्रतिफल को यदि कोई चाहे तो उपासना का चमत्कार कह सकता है।

ईश्वर निष्पक्ष न्यायकारी है, उसके दरबार में किसी का मूल्य उसकी प्रामाणिकता एवं परमार्थ परायणता के आधार पर ही आँका जाता है। न उसे प्रशंसा की आवश्यकता है न पूजा सामग्री की। नाम लेने न लेने का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसे किसी उपहार की भी कोई आवश्यकता नहीं। विश्व संपदा के अधिष्ठाता की ऐसी इच्छा आवश्यकता हो भी नहीं सकती। यह हमारी अपनी क्षुद्रता है जो इतनी बड़ी शक्ति को नगण्य से उपचारों से प्रभावित करके उससे उचित अनुचित मनोरथों की पूर्ति कर देने की बात सोचते हैं। ऐसा पक्षपात तो कोई ईमानदार न्यायाधीश तक नहीं करता। फिर ईश्वर जैसी महान शक्ति प्रशंसा पूजा जैसे उपहासास्पद उपहारों के बदले कर्मफल की समस्त नियम मर्यादाओं को नष्ट-भ्रष्ट कर देगी यह सोचना परले सिरे की मूर्खता का परिचय देना है।

ईश्वर उपासना जिन्हें भी करनी हो वे इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए करें। उस आधार पर उपलब्ध होने वाली दिव्य प्रेरणाओं के सहारे अपने गुण, कर्म, स्वभाव की प्रसुप्त विशेषताओं को विकसित करें और उन्हीं समस्त सिद्धियों-विभूतियों को पाने के अधिकारी बनें जो भक्तियोग की साधना करने वालों में मिलने की बात शास्त्रकारों एवं आप्त-जनों ने अपने प्रतिपादनों में समय-समय पर बताई है।

❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म देव की परिष्कृति से पात्रता की प्राप्ति

आत्मिक प्रगति की साधना में कई प्रकार के कठोर नियम पालन करने पड़ते हैं—व्रत, उपवास, ब्रह्मचर्य जैसी तितिक्षाओं से शरीर को इस योग्य बनाया जाता है कि वह कठिनाइयाँ सहने का अभ्यस्त तथा तज्जनित गर्मी से सुदृढ़ होने का अवसर प्राप्त कर सके।

उपवास के लाभ सर्वविदित हैं। पेट को विश्राम देने से उसमें जमा अपच दूर होता है और थकान दूर होने से पाचन क्रिया में तीव्रता आती है। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में रोग निवृत्ति का प्रधान उपाय उपवास को माना गया है। उदर शोधन के अतिरिक्त उपवास का विशेष लाभ यह है कि उससे मनोविकारों का शमन होने लगता है। जो शक्ति पालन में लगती है वह यदि बच सके तो उसका उपयोग मन के अपच को—विचार विकृति को दूर करने में लग सकता है। भारतीय धर्म में पुण्य पर्वों एवं शुभ अवसरों पर उपवास को बहुत महत्त्व दिया गया है। विवाह के दिन वर-वधू के उपवास करने की प्रथा है। दैनिक उपासना पूरी न हो जाने तक कुछ न खाने-पीने का नियम कई लोग पालते हैं—यह उपवास का छोटा रूप है। उपवास को तप माना गया है।

अन्न का मन से घना संबंध है। दैनिक जीवन में सतोगुणी आहार ही अपनाने की बात ध्यान में रखी जाए तो उसका प्रतिफल विचार शुद्धि के रूप में भी परिलक्षित होगा। नीति उपार्जित परिश्रम की कमाई ही खाई जाए। पकाने वाले तथा परोसने वाले व्यक्ति शारीरिक और मानसिक दृष्टि से पवित्र हों। खाते समय भगवान को मन ही मन भोग लगाने और उसे प्रसाद समझ कर औषधि रूप में ग्रहण करने की भावना रखी जाए। चटोरेपन की विलासिता से बच कर केवल आहार की सात्विकता भर से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतुष्ट रहा जाए। अन्न को देवता मानकर उसका सम्मान किया जाए और जूठन के रूप में उसकी अनावश्यक बर्बादी न की जाए। ये बातें सामान्य लगती हैं, पर आत्मिक प्रगति की दृष्टि से इनका बहुत महत्त्व है। 'जैसा खाए अन्न—वैसा बने मन' वाली उक्ति बहुत ही सारगर्भित है। मन को सात्विक बनाना आत्मोत्कर्ष की दृष्टि से नितांत आवश्यक है। उसके लिए आहार शुद्धि को प्रथम चरण कहा जा सकता है। मांसाहार, नशेबाजी- अशुद्ध व्यक्ति और वातावरण में पकाया और परोसा गया मिर्च मसालों से भरा गरिष्ठ और उत्तेजक आहार मनःक्षेत्र में तमोगुण उत्पन्न करता है और उनका प्रभाव चित्त की अस्थिरता बनकर उपासना क्रम में भारी विघ्न उत्पन्न करता है।

पिप्पलाद ऋषि पीपल वृक्ष के फल खाकर निर्वाह करते थे। कणाद ऋषि शिलौञ्छ वृत्ति से जंगली धान्य खाकर गुजारा करते थे। यह अन्न शुद्धि की प्रक्रिया है। हमें स्वयं लंबी अवधि तक मात्र जौ की रोटी और छाछ इन दो ही वस्तुओं पर रहकर पुरश्चरण क्रम चलाना पड़ा है। अभक्ष्य खाने से मन की विकृति का होना स्पष्ट है। शरशैया पर पड़े भीष्म पितामह जब धर्मोपदेश दे रहे थे तब द्रोपदी ने पूछा—देव! जब मुझे भरी सभा में निर्वसन किया जा रहा था, तो आपने यही धर्मोपदेश कौरवों को क्यों नहीं दिए? उत्तर में भीष्म ने उतना ही कहा—उन दिनों में कुधान्य खा रहा था, अस्तु, धर्मज्ञान रहते हुए भी उसे चरितार्थ करने का साहस संभव न हो सका।

आहार शुद्धि के लिए हम अपने खाद्य पदार्थों में सात्विक वस्तुएँ ही स्वीकार करें। दो बार से अधिक भोजन न करने का नियम बनालें। दूध, छाछ रस, क्वाथ जैसे पेय पदार्थों के अतिरिक्त बीच-बीच में अन्य चीजें न लें। भूख से कम खाएँ। जल्दी न निगलें, चबा कर खाएँ। सप्ताह में एक दिन अथवा एक जून निराहार रहें अथवा फल, शाक, दूध आदि पर निर्वाह करें। साप्ताहिक उपवास की परंपरा चल पड़े तो देश की जटिल खाद्य समस्या का सहज समाधान निकल सकता है। साथ ही अपच का हल निकल आने से स्वास्थ्य संकट भी बहुत हद तक हल हो सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सप्ताह में एक दिन अस्वाद व्रत का पालन भी एक प्रकार का उपवास ही माना जा सकता है। नमक, मसाले, शक्कर जैसी वस्तुएँ मात्र स्वाद के लिए खाई जाती हैं। उपयोगी स्तर का-उपयुक्त मात्रा में नमक शक्कर आदि तो अन्न शाक, फल, दूध आदि में सहज ही मिल जाता है। ऊपर से इन चीजों का लिया जाना स्वास्थ्य के लिए नहीं वरन् स्वाद के लिए ही प्रयुक्त होता है। स्वाद के लोभ में आहार की अधिक मात्रा उदरस्थ होती है और अपच उत्पन्न करके तरह-तरह के रोगों को जन्म देती है। स्वाद पर काबू पाना भी एक प्रकार का तप है। बिना नमक, शक्कर, मसाले आदि का भोजन सप्ताह में एक दिन भी किया जाता रहे तो इससे स्वादेंद्रिय पर नियंत्रण करने की तपश्चर्या चल पड़ेगी। गाँधी जी ने अपनी 'सप्त महाव्रत' पुस्तिका में 'अस्वाद' को प्रथम व्रत माना है और उसके फलस्वरूप ब्रह्मवर्चस पालन तथा मनोनिग्रह में सफलता मिलने का प्रतिपादन किया है।

मनोनिग्रह तपश्चर्या में दूसरा व्रत ब्रह्मचर्य पालन है। स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से रतिक्रिया के अवसर न्यूनतम ही आने देने चाहिए, बहुमूल्य जीवन रस को फूलझड़ी की तरह जलाने का अत्यंत महँगा खिलवाड़ करने से बचना चाहिए। इससे अपनी और सहयोगी की हानि ही है। क्षणिक विनोद की तुच्छता और शक्ति संचय की महत्ता को समझते हुए इस दिशा में अधिकाधिक संयम बरता जाना ही दूरदर्शिता है। इस बचत का लाभ शारीरिक और मानसिक सुदृढ़ता के रूप में सामने आता है और आत्मिक प्रगति की दिशा में उस संयम से भारी सहायता मिलती है।

शारीरिक ब्रह्मचर्य से भी अधिक महत्त्व मानसिक कामुकता से बचने का है। शरीर क्षरण तो यदा-कदा ही होता है, पर कुदृष्टि एवं काम चिंतन के फलस्वरूप मानसिक विकृति घड़ी-घड़ी उत्पन्न होती रहती है। काम सेवन से जिस प्रकार शारीरिक शक्ति घटती है। उसी प्रकार काम चिंतन से मनोबल एवं आत्मबल घटता है, इससे आत्म-शक्ति में कमी पड़ती जाती है। ऐसी दुर्बल मनःस्थिति में वे आधार नहीं बन पाते जिनसे आत्मोत्कर्ष की दिशा में आशाजनक प्रगति संभव होती है। पुरुषों को नारियों के प्रति और नारियों को पुरुषों के प्रति पवित्र दृष्टि रखनी चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कामुक चिंतन भी मानसिक व्यभिचार माना गया है और उससे होने वाली हानि को आत्मिक प्रगति के मार्ग में भारी व्यवधान माना गया है। मन को कामुक चिंतन से बचाने के लिए उसके प्रति-पक्षी पवित्र भावों को अधिक समय तक मन में स्थान देना चाहिए। जितनी देर अशुद्ध चिंतन के लिए मस्तिष्क को छूट दी जाती है, उतनी ही सुविधा यदि परिष्कृत चिंतन के लिए दी जा सके तो उस परिष्कृत मनोभूमि से काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, चिंता, निराशा, भय आदि का कोई कुविचार, मनोविकार पनप न सकेगा। सृजनात्मक शुभ चिंतन के विचारों से मन को भरा पूरा रखने के लिए स्वाध्याय, सत्संग, मनन चिंतन का आश्रय लेकर मनोभूमि ऐसी प्रौढ़, परिपक्व बनाई जा सकती है जिसमें कुविचारों को पैर जमाने के लिए तनिक भी गुंजाइश न रहे।

हनुमान, भीष्म, शंकराचार्य, समर्थ, विवेकानंद आदि ब्रह्मचारियों के उज्ज्वल चरित्रों पर बार-बार विचार किया जाना चाहिए। शिवाजी ने एक अनिद्य सुंदरी को उपभोग के लिए प्रस्तुत किए जाने पर इतना ही कहा था—"ऐसी सुंदर मेरी माता होती तो मैं भी इतना सुंदर होता" अप्सरा उर्वसी ने अर्जुन से उसी जैसा पुत्र पाने के उद्देश्य से काम प्रस्ताव किया तो अर्जुन ने उत्तर दिया—"आप कुंती की तरह मेरी माता और मैं आपका सगे पुत्र की तरह बालक हूँ। उसी प्रकार तत्काल आपकी पुत्र प्राप्ति की मनोकामना पूर्ण हो जाती है।" ऐसी ही पवित्र दृष्टि रखने से आत्मबल संचित होता है। इस मनोनिग्रह को तप की ही संज्ञा दी गई है। स्वादेंद्रिय और कामेंद्रिय की स्थूल और सूक्ष्म लिप्सा पर काबू पाया जा सके तो समझना चाहिए कि इंद्रिय निग्रह का उद्देश्य पूरा हो गया। आँख, नाक, आदि की चित्त को चंचल बनाने में तनिक सी भूमिका रहती है। प्रधान तो यही दो स्वादेंद्रियाँ हैं इनका उपभोग और चिंतन रोकने के लिए जो प्रयत्न किए जाते हैं, उन सभी को तपश्चर्या का अंग माना गया है।

भूलों के लिए शारीरिक—मानसिक दंड, प्रताड़ना को प्रायश्चित कहते हैं। ये भी तप वर्ग में ही आती हैं। दैनिक भूलों को समझना और भविष्य में वैसा न होने देने की सतर्कता तीव्र करना—यदि नैतिक गलतियाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुई हैं तो उनके लिए भोजन में आंशिक कटौती, अमुक समय का मौन, नींद में कटौती, अतिरिक्त श्रम, उठक-बैठक जैसी प्रताड़ना, दंड व्यवस्था स्वयं की जा सकती है। पिछले जीवन में कोई बड़े अपराध बने हों तो उनके लिए चंद्रायण व्रत, दाड़ी बनाना, अमुक समय तक नंगे पैर रहना, पैदल तीर्थ यात्रा, धन दान जैसी किन्हीं विशेष प्रायश्चित्यों की व्यवस्था किसी उपयुक्त नीतिवेत्ता के परामर्श से करनी चाहिए। इससे मन पर चढ़े हुए पाप भार से निवृत्ति मिलती है।

स्थूल शरीर को तपाने वाली उपरोक्त कुछ कष्ट साध्य तप-तितीक्षाओं का उल्लेख किया गया है। सूक्ष्म शरीर—मन को तपाने के लिए तृष्णा और वासना का लोभ और मोह का परित्याग करना पड़ता है। वैराग्य इसी का नाम है। सादा जीवन उच्च विचार का घनिष्ठ संबंध है। सूक्ष्म शरीर में उत्कृष्टता बनी रहे इसके लिए सादगी की नम्रता एवं मितव्ययिता का अपनाया जाना आवश्यक है। खर्चीली तड़क-भड़क और उद्धत ठाटबाट से बचा जाए और भोजन, वस्त्र निवास आदि जीवनचर्या के प्रत्येक क्षेत्र में औसत नागरिक जैसी सादगी बरती जाए। खर्च उतना ही किया जाए जितना निर्वाह के लिए नितांत आवश्यक हो। आवश्यकताएँ और भौतिक महत्त्वाकाँक्षाएँ घटाई जाएँ ताकि उनमें लगने वाला समय, श्रम और मनोयोग परमार्थ प्रयोजनों में लगाने के लिए बचाया जा सके।

(१) समय और सादगी की नीति अपना कर शक्तियों के संचय एवं अभिवर्धन के लिए प्रयत्नशील रहने में अपने साथ कठोरता बरतना (२) लोक मंगल के पुण्य प्रयोजनों में अपनी सामर्थ्य का बड़ा भाग लगाने के कारण स्वयं को कठिनाई में रहने की स्थिति का अभ्यास (३) स्वार्थरत लोगों जितना भौतिक लाभ उपार्जन करने में न्यूनता रह जाने पर भी संतोष (४) अनीति से संघर्ष करने में आसुरी तत्त्वों के आक्रमण से आघात। ये सब कारण ऐसे हैं जिनसे उच्चस्तरीय महा मानवोचित जीवन जीने वालों का आए दिन वास्ता पड़ता है। विलासी और महत्त्वाकाँक्षी रीति-नीति अपनाने वालों का न्यायोचित उपार्जन अपनी बड़ी-चढ़ी आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं कर पाता फिर वे मानवता के महान कर्त्तव्यों का पालन करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए समय और साधन कहाँ से पाएँ? ये प्रयोजन अपने साथ मितव्ययिता, कष्ट, सहिष्णुता, मनोनिग्रह जैसी सख्ती बरते बिना और किसी प्रकार पूरे नहीं हो सकते।

अनीति पर उतारू लोगों को सिद्धांतवादी सहन नहीं हो सकते, वे देखते हैं कि प्रत्यक्ष न सही परोक्ष रूप से वे उनके स्वेच्छाचार में बाधक हैं। नीति का समर्थन और अनीति का विरोध करना भी उनके स्वार्थों पर चोट पहुँचाता है। वे सोचते हैं, यह रोड़ा रास्ते से हटाकर निष्कंटक होना चाहिए। ऐसी दशा में अनीति पोषकों के आक्रमण का शिकार होना पड़ता है। फिर कई बार ऐसी विवशता आ जाती है कि अवांछनीयताओं को चुपचाप सहने के लिए अपना अंतरात्मा तैयार नहीं होता और अन्याय से जूझने में बड़ी से बड़ी हानि उठाने के लिए भी अपना शौर्य-साहस तन कर बड़ा हो जाता है। प्रसिद्ध है कि आक्रांता लोग संगठित हमला करते हैं, पर बचाव पक्ष के लोग अपनी भीरुता अथवा तथाकथित शांति प्रियता के कारण मुँह छिपाए बैठे रहते हैं। चार गुंडों का मुकाबिला करने में चालीस सामान्य लोग हलके पड़ते हैं। ऐसी दशा में अन्याय विरोधी अकेला पड़ जाता है और उसे अपनी विरोधात्मक साहसिकता के कारण कई प्रकार के आघात सहने पड़ते हैं। इतिहास के पृष्ठों पर संतों, सुधारकों और शहीदों को दुष्टों द्वारा तरह-तरह से सताए जाने के अगणित घटनाक्रम मिलते हैं। इनका दोष इतना ही था कि उनने अवांछनीयताओं के साथ असहयोग, विरोध प्रकट किया था और उनका उन्मूलन करने का प्रयास कर रहे थे। विरोध न करने से अनीति को प्रोत्साहन मिलता है और वह सौ गुने उत्साह से विनाश पर उतारू होती है, ऐसी दशा में प्रतिरोध अनिवार्य हो जाता है। तब जो इतना साहस दिखाएँ वे चोट सहने को भी तैयार रहें, इसी की पूर्व तैयारी के लिए भी कष्ट सहिष्णुता का पूर्वाभ्यास करना पड़ता है।

सुविधा भरा जीवन आलसी बनता है और प्रतिभा को प्रसुप्त स्थिति में धकेल देता है। संघर्षमय, कठिनाई भरे जीवन में अन्य असुविधाएँ कितनी ही क्यों न हों, इतना लाभ स्पष्ट है कि उससे मनुष्य की प्रखरता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निखरती है। अमीरी के वातावरण में से कदाचित ही कभी कोई प्रतिभाएँ उभरती हैं। संसार भर के महामानवों के इतिहास में यह तथ्य स्पष्ट है कि वे या तो कठिनाइयों की परिस्थिति में जन्मे थे अथवा उनने जान-बूझकर कठिनाइयों से भरा जीवन क्रम अपनाया था। पत्थर पर रगड़ने से ही चाकू की धार तेज होती है। मानवी प्रतिभा के तीक्ष्ण होने में भी यही तथ्य काम करता है।

गायत्री पुरश्चरणों के साथ आमतौर से साधकों को भोजन, संयम, अस्वाद-व्रत, उपवास, ब्रह्मचर्य पालन, अपने शरीर की सेवा—कपड़े धोना, हजामत बनाना आदि कार्य स्वयं करना, कोमल शैय्या त्याग कर भूमि या तख्त पर सोना, मारे हुए पशुओं का चमड़ा प्रयोग में न लाकर करुणा का परिचय देना, कुछ समय मौन रहना जैसी तितिक्षाएँ बरतने के लिए कहा जाता है। इस निर्देश के पीछ तथ्य इतना ही है कि कष्ट सहिष्णुता का अभ्यास करते हुए हर घड़ी यह विचार करते रहा जाए कि आदर्श जीवन जीने वाले के लिए स्वेच्छापूर्वक असुविधाएँ सहन करने में उत्साह एवं संतोष करने का स्वभाव परिपक्व करना आवश्यक है। अभ्यास रहने से, वैसा चिंतन चलते रहने से अवसर आने पर वे अड़चनें अप्रत्याशित नहीं लगतीं और सोचा जाता है यह तो होना ही था, इसकी तैयारी तो पूर्वाभ्यास के रूप में देर से की जाती रही है।

तप तितिक्षा में शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक कठिनाई को स्वेच्छा पूर्वक आमंत्रित किया जाता है। इसे देवता के प्रति भक्ति भाव प्रदर्शन का प्रमाण माना जाता है, वस्तुत: यह देवता और कोई नहीं 'आत्म-देव' ही है। अपने आपको परिष्कृत करके देवता के स्तर तक पहुँचाने के प्रयास ही वास्तविक साधनाएँ हैं। उसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधन—विधान का ढाँचा खड़ा किया गया है। यह तथ्य समझ लेने पर ही साधक को तत्त्व ज्ञान उपलब्ध हो गया माना जाएगा।

❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर पर विश्वास अनिवार्य किसलिए

ईश्वर विश्वास की इसलिए आवश्यकता है कि उसके सहारे हम जीवन का स्वरूप, लक्ष्य एवं उपयोग समझने में समर्थ होते हैं। यदि ईश्वरीय विधान को अमान्य ठहरा दिया जाए तो फिर मत्स्यन्याय का ही बोल-वाला रहेगा। आंतरिक नियंत्रण के अभाव में बाह्य नियंत्रण मनुष्य जैसे चतुर प्राणी के लिए कुछ बहुत अधिक कारगर सिद्ध नहीं हो सकता। नियंत्रण के अभाव में सब कुछ अनिश्चित और अविश्वस्त बन जाएगा। ऐसी दशा में हमें आदिमकाल की वन्य स्थिति में वापिस लौटना पड़ेगा और शरीर निर्वाह करते रहने के लिए पेट-प्रजनन एवं सुरक्षा जैसे पशु प्रयत्नों तक सीमित रहना पड़ेगा। ईश्वर विश्वास ने आत्म-नियंत्रण का पथ-प्रशस्त किया है और उसी आधार पर मानवी सभ्यता का, आचार संहिता का, स्नेह-सहयोग एवं विकास परिष्कार का पथ प्रशस्त किया है। यदि मान्यता क्षेत्र से ईश्वरीय सत्ता को हटा दिया जाए तो फिर संयम और उदारता जैसी मानवी विशेषताओं को बनाए रहने का कोई दार्शनिक आधार शेष न रह जाएगा। तब चिंतन के क्षेत्र में जो उच्छृंखलता प्रवेश करेगी उसके दुष्परिणाम वैसे ही होंगे जैसे कि कथा-गाथाओं में असुरों के नृशंस क्रिया-कलाप का वर्णन पढ़ने सुनने को मिलता है।

ईश्वर अंध विश्वास नहीं एक तथ्य है। विश्व की व्यवस्था सुनियंत्रित है, सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र आदि सभी का उदय-अस्त क्रम अपने ढर्रे पर ठीक तरह चल रहा है, प्रत्येक प्राणी अपने ही जैसी संतान उत्पन्न करता है और हर बीज अपनी ही जाति के पौधे उत्पन्न करता है। अणु-परमाणुओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से लेकर समुद्र-पर्वतों तक की उत्पादन वृद्धि एवं मरण का क्रिया-कलाप अपने ढंग से ठीक प्रकार चल रहा है। शरीर और मस्तिष्क की संरचना और कार्यशैली को देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। ऐसी सुव्यवस्थित कार्य पद्धति बिना किसी चेतना शक्ति के अनायास ही नहीं चल सकती। उस नियंता का अस्तित्व जड़ और चेतन के दोनों क्षेत्रों में प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों कसौटियों पर पूर्णतया खरा सिद्ध होता है। वह समय चला गया जब अधकचरे विज्ञान के नाम पर संसार क्रम को स्वसंचालित और प्राणी को चलता-फिरता पौधा मात्र ठहराया गया था। अब पदार्थ विज्ञान और चेतन विज्ञान में इतनी प्रौढ़ता आ गई है कि वे नियामक चेतना शक्ति के अस्तित्व को बिना किसी आना-कानी के स्वीकार कर सकें।

कर्मफल की व्यवस्था भी उसी नियंत्रण के अंतर्गत आती है। समाज और शासन द्वारा दंड, पुरस्कार की व्यवस्था है। ईश्वरीय न्याय में भी सत्कर्मों के लिए समुचित दंड और पुरस्कार का विधान है। देर तो मुकदमा फैसिल होने में भी लगती है और बीज बोने के बाद फसल काटने में भी। इस व्यवस्था को स्थूल बुद्धि समझ नहीं पाती। सत्कर्मों का फल तत्काल न मिलने पर लोग अधीर होने लगते हैं और दुष्कर्मों का तात्कालिक लाभ देख कर उनके लिए आतुरता प्रकट करते हैं। इन भुलभुलैयों में भटका व्यक्ति अपना और समाज का भविष्य अंधकारमय बनाता है और वर्तमान को अवांछनीयताओं से भर देता है। इस गडबड़ी की रोकथाम में ईश्वर विश्वास से भारी सहायता मिलती है और व्यक्तिगत चरित्र निष्ठा एवं समाज गत सुव्यवस्था का आधार सुदृढ़ बना रहता है। इन्हीं सब दूरगामी परिणामों को देखते हुए तत्त्वज्ञानियों ने ईश्वर विश्वास को दृढ़तापूर्वक अपनाए रहने के लिए जन-साधारण को विशेष रूप से प्रेरणा दी है। वह आधार दुर्बल न होने पाए, हर रोज स्मृतिपटल पर जमा रहे, इसलिए साधना, उपासना के धर्म-कृत्यों का सुविस्तृत विधि-विधान विनिर्मित किया है। इन्हें अपनाकर मनुष्य दिव्यसत्ता को अपने भीतर-बाहर विद्यमान देखता है और सुमार्ग पर चलने का अधिक उत्साह के साथ प्रयत्न करता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। ईश्वर विश्वास के फलस्वरूप पशु प्रवृत्तियों के नियंत्रण में भारी सहायता मिलती है और व्यक्ति तथा समाज का स्तर संतुलित बनाए रहने का प्रयोजन बहुत अंशों तक पूरा होता है। नास्तिकता अपना कर विश्व-शांति का—मानवी उत्कृष्टता का आधार ही डगमगाने लगेगा, इसलिए तत्त्वदर्शियों ने आध्यात्मिक अनास्था की—नास्तिकता की कठोर शब्दों में भर्त्सना की है।

जीवन-दर्शन को ईश्वर विश्वास से उच्चस्तरीय प्रेरणा मिलती है। संसार के सभी प्राणी ईश्वर के पुत्र हैं। हर कोई न्यायप्रिय, निष्पक्ष पिता अपनी सभी संतानों को लगभग समान अनुदान देने का प्रयत्न करता है। ईश्वर ने अन्य प्राणियों को मात्र शरीर निर्वाह जितनी बुद्धि और सुविधा दी तथा मनुष्य को बोलने, सोचने, पढ़ने, कमाने, बनाने आदि की अनेक विभूतियाँ दी हैं। अन्य प्राणियों की और मनुष्यों की स्थिति की तुलना करने पर जमीन आसमान जैसा अंतर दिखाई पड़ता है। इसमें पक्षपात और अनीति का आक्षेप ईश्वर पर लगता है। जब सामान्य प्राणी अपनी संतान को समान स्नेह, सहयोग देते हैं तो फिर ईश्वर ने इतना अंतर किसलिए रखा? एक को इतना नीचा कैसे रखा? इस विभेद को समझने में प्रत्येक विवेक संपन्न व्यक्ति को भारी उलझन का सामना करना पड़ता है।

तत्त्वदर्शी विवेक बुद्धि इस विभेद के अंतर का कारण भली प्रकार स्पष्ट कर देती है। मनुष्य को अपने वरिष्ठ सहकारी जेष्ठ पुत्र के रूप में सृजा गया है। उसके कंधों पर सृष्टि को अधिक सुंदर, समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। इसके लिए उसे विशिष्ट साधन उसी प्रयोजन के लिए अमानत के रूप में दिए गए हैं। मिनिस्टरों को सामान्य कर्मचारियों की तुलना में सरकार अधिक सुविधा साधन इसलिए देती है कि उसकी सहायता से वे अपने विशिष्ट उत्तरदायित्वों का निर्वाह सुविधा पूर्वक कर सकें। ये सुविधाएँ उनके व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं वरन् जनसेवा के लिए दी जाती हैं, बैंक के खजांची के हाथ में बहुत-सा पैसा रहता है, यह उसके निजी उपभोग के लिए नहीं बैंक प्रयोजन के लिए अमानत रूप में रहता है। निजी प्रयोजन के लिए तो क्या मिनिस्टर, क्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खजांनची सभी को सीमित सुविधा मिलती है। अत्यधिक साधन जो उनके हाथ में रहते हैं उन्हें वे निर्दिष्ट कार्यों में ही खरच कर सकते हैं। मानवी कार्यों में उपभोग करने लगें तो यह दंडनीय अपराध होगा।

ठीक इसी प्रकार मनुष्य के पास सामान्य प्राणियों को उपलब्ध शरीर निर्वाह भर के साधनों के अतिरिक्त जो कुछ भी श्रम, समय, बुद्धि, वैभव, धन, प्रभाव, प्रतिभा आदि की विभूतियाँ मिली हैं, वह सभी लोकोपयोगी प्रयोजनों के लिए मिली हुई सार्वजनिक संपत्ति हैं। शरीर रक्षा एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के लिए औसत नागरिक स्तर का निर्वाह कर लेने के अतिरिक्त मनुष्य के पास जो कुछ बचता है उसकी एक-एक बूँद उसे लोक कल्याण के लिए नियोजित करनी चाहिए। इसी में ईश्वरीय अनुदान और मानवी गरिमा की सार्थकता है। प्रत्येक आस्तिक को सुर दुर्लभ मनुष्य जीवन की गरिमा और जिम्मेदारी समझनी चाहिए तथा उसी के अनुरूप अपने चिंतन तथा कर्त्तव्य का निर्धारण करना चाहिए। अपनी विशेषताओं का उपयोग इसी महान प्रयोजन के लिए करना चाहिए।

जीवन-दर्शन की यह उत्कृष्ट प्रेरणा ईश्वर विश्वास के आधार पर ही मिलती है। जीवन क्या है, क्यों है, उसका लक्ष्य एवं उपयोग क्या है? इन प्रश्नों का समाधान मात्र आस्तिकता के साथ जुड़ी हुई दिव्य दूरदर्शिता के आधार पर ही मिलता है। इसी प्रेरणा से प्रेरित मनुष्य संकीर्ण स्वार्थपरता से—वासना, तृष्णा के भव-बंधनों से छुटकारा पाकर आत्म-निर्माण की ओर—आत्म विस्तार की ओर—आत्म-विकास की ओर अग्रसर होता है और ऐतिहासिक महामानवों जैसी देव भूमिका अपनाने के लिए अग्रसर होता है। व्यक्ति और समाज के कल्याण के महान आधार खड़े करने वाली यह एक बहुत बड़ी दार्शनिक उपलब्धि है। यदि आस्तिकता का सही स्वरूप समझा जा सके और जीवन-दर्शन के साथ उसे ठीक प्रकार जोड़ा जा सके तो निश्चय ही मनुष्य में देवत्व का उदय और इसी धरती पर स्वर्ग का अवतरण संभव हो सकता है। यही तो ईश्वर द्वारा मनुष्य सृजन का एकमात्र उद्देश्य है। सृष्टि के सभी प्राणी एक पिता के पुत्र होने के नाते सहोदर भाई हैं और वे परस्पर एक-दूसरे का स्नेह, सहयोग पाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के अधिकारी हैं। आस्तिकता यही मान्यता अपनाने के लिए प्रत्येक विचारशील को प्रेरणा देती है। इसका अनुकरण करके प्राणिमात्र के बीच आत्मीयता की भावना विकसित होती है और उसके आधार पर एक-दूसरे के दु:ख-दर्द को अपना समझने एवं उदार व्यवहार करने की आकांक्षा प्रबल होती है। विश्व-कल्याण की दृष्टि से इस प्रकार की भावनात्मक स्थापनाएँ अतीव श्रेयस्कर परिणाम प्रस्तुत कर सकती हैं। कहना न होगा कि यह दृष्टिकोण हर दृष्टि से—हर क्षेत्र से उज्ज्वल भविष्य की भूमिका प्रस्तुत कर सकने वाला सिद्ध हो सकता है।

ईश्वर विश्वास के कल्पवृक्ष पर तीन फल लगते बताए गए हैं—(१) सिद्धि (२) स्वर्ग (३) मुक्ति। सिद्धि का अर्थ है प्रतिभावान परिष्कृत व्यक्तित्व एवं उसके आधार पर बन पड़ने वाले प्रबल पुरुषार्थ की प्रतिक्रिया अनेकानेक भौतिक सफलताओं के रूप में प्राप्त होना। स्पष्ट है कि चिरस्थाई और प्रशंसनीय मनुष्य को दुष्प्रवृत्तियों से निरत करने और सत्प्रवृत्तियों को अपनाने के लिए उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तृत्व अपनाना पड़ता है। यह सभी आधार आस्तिकतावादी दर्शन में कूट-कूटकर भरे हैं। आज का विकृत अध्यात्म-दर्शन तो मनुष्य को उलटे भ्रम-जंजालों में फँसाकर सामान्य व्यक्तियों से भी गई-गुजरी स्थिति में धकेलता है, पर यदि उसका यथार्थ स्वरूप विदित हो और उसे अपनाने का साहस बन पड़े तो निश्चित रूप से परिष्कृत व्यक्तित्व का लाभ मिलेगा। जहाँ यह सफलता मिली तो अन्य सफलताएँ हाथ बाँधकर सामने खड़ी दिखाई पड़ेंगी। महामानवों द्वारा प्रस्तुत किए गए चमत्कारी क्रिया-कलाप इसी तथ्य की साक्षी देते हैं। इसी को सिद्धि कहते हैं। अध्यात्मवादी आस्तिक व्यक्ति चमत्कारी सिद्धियों से भरे पूरे हैं। इस मान्यता को उपरोक्त आधार पर अक्षरश: सही ठहराया जा सकता है। किंतु यदि सिद्धि का मतलब बाजीगरी जैसी अचम्भे में डालने वाली करामातें समझा जाए तो यही कहा जाएगा कि वैसा दिखाने वाले धूर्त्त और देखने के लिए लालायित व्यक्ति मूर्ख के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं।

आस्तिकता के कल्पवृक्ष पर लगने वाला दूसरा फल है—स्वर्ग। स्वर्ग का अर्थ है—परिष्कृत गुणग्राही विधायक दृष्टिकोण। परिष्कृत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृष्टिकोण होने पर अभावग्रस्त और दरिद्र नहीं रह सकता क्योंकि मनुष्य जीवन अपने आप में इतना पूर्ण है कि उसे संसार की किसी भी संपदा की तुलना में अधिक भारी माना जा सकता है। शरीर यात्रा के अनिवार्य साधन प्राय: हर किसी को मिले होते हैं, अभाव तृष्णाओं की तुलना में उपलब्धियों को कम आँकने के कारण ही प्रतीत होता है। अभावों की, कठिनाइयों की, विरोधियों की लिस्ट फाड़ फेंकी जाए और उपलब्धियों, सहयोगियों की सूची नए सिरे से बनाई जाए तो प्रतीत होगा कि कायाकल्प जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। दरिद्रता चली गई, उसके स्थान पर वैभव आ विराजा। छिद्रान्वेषण की आदत हटाकर गुणग्राहकता अपनाई जाए तो प्रतीत होगा कि इस संसार में ईश्वरीय उद्यान की—नंदन वन की सारी विशेषताएँ विद्यमान हैं। स्वर्ग इसी विधायक दृष्टिकोण का नाम है—जिसे अपनाकर अपनी सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों की देव संपदा को हर घड़ी प्रसन्न रहने के लिए पर्याप्त माना जा सकता है।

आस्तिकता का तीसरा प्रतिफल है—मुक्ति। मुक्ति का अर्थ है—अवांछनीय भव-बंधनों से छूटना। अपनी दुष्प्रवृत्ति, मूढ़ मान्यताएँ एवं विकृत आकांक्षाएँ ही वस्तुत: सर्वनाश करने वाली पिशाचनी है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, छल, चिंता, भय, दैन्य जैसे मनोविकार ही व्यक्तित्व को गिराते, गलाते, जलाते रहते हैं। आधि और व्याधि इन्हीं के आमंत्रण पर आक्रमण करती हैं। आस्तिकता इन्हीं दुर्बलताओं से जूझने की प्रेरणा भरती है। सारा साधना शास्त्र इन्हीं दुष्प्रवृत्तियों को उखाड़ने, खदेड़ने की पृष्ठभूमि विनिर्मित करने के लिए खड़ा किया गया है। इनसे छुटकारा पाने पर देवत्व द्रुतगति से उभरता है और अपनी स्वतंत्रता का उल्लास भरा अनुभव होता है।

मनुष्य कितने ही दुराग्रहों, पूर्वाग्रहों, पक्षपातों, प्रचलनों, अनुकरणों से घिरा बँधा कंटकाकीर्ण राह पर घिसटता रहता है। स्वतंत्र चिंतन की विवेक दृष्टि उसे कदाचित ही मिल पाती है। यदि वह मिली होती तो निश्चय ही औचित्य को प्रश्रय दिया गया होता और तथाकथित मित्र-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिचित क्या कहते हैं? इसकी पूर्ण उपेक्षा करके विवेक की तलाश में कदम बढ़ाने का साहस सँजोया होता। महामानव इसी सत्साहस के बल पर स्वयं धन्य बने हैं और अपने युग को—क्षेत्र को धन्य बनाया है। जीवन-मुक्त पुरुष अवांछनीय चिंतन से मुक्त होते हैं और आत्मिक स्वतंत्रता का आनंद लेते हैं। स्पष्ट है कि ईश्वर भक्तों को संयमी, स्वार्थपरता से रहित, लोकोपयोगी ब्राह्मण और साधु स्तर का जीवन जीना पड़ता है। इसी में मनुष्य जीवन की सार्थकता है। ईश्वर विश्वास अपनाकर हम जीवन लक्ष्य प्राप्त करने की ओर अग्रसर होते हैं और उसे पाकर रहते हैं।

आस्तिकता के सिद्धि, स्वर्ग, मुक्तिरूपी तीन फलितार्थों के शास्त्रीय स्वरूप पर किसी को आपत्ति हो तो भी इसी जीवन में चरितार्थ होने वाली उन परिणतियों के संबंध में कभी भी दो मत नहीं हो सकते, जिनकी कि चर्चा ऊपर की गई है। नास्तिकता के प्रतिपादन इसी संबंध में ऊहापोह करते व शास्त्रार्थ करते देखे गए हैं। वस्तुत: ईश्वर विश्वास एक ऐसा दर्शन है जो किसी भी धर्म संप्रदाय के अनुयायी द्वारा अपनाए जाने पर आत्मबल-विवेक दृष्टि के रूप में विकसित होता व उनके जीवन को सफल बनाता है। सफल महामानवों के प्रसंग इस संबंध में देखे जा सकते हैं। उन्होंने आत्म-विश्वास के रूप में, चहुँ ओर फैले व्यवस्थारूपी अनुशासन के रूप में, सिद्धांतवादिता नीतिमत्ता के चमत्कारों के रूप में ईश्वर को देखा और आस्तिकता को अपनाया। यही वह दर्शन है जिसे जीवन में उतार कर कोई भी अपना मनुष्य जन्म धन्य करता है।

❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर आराधना ही समस्याओं का अंतिम उपचार

व्यक्तियों की गतिविधियाँ जब श्रेष्ठता से समन्वित रहती हैं तो उनके श्रम, समय, मनोयोग एवं साधनों का उपयोग सत्प्रयोजनों में होता है, फलतः सुखद परिस्थितियाँ बढ़ती जाती हैं, निरर्थक कार्यों में लगने से पिछड़ेपन की और अनर्थ कार्यों से अधःपतन की परिस्थितियाँ बनती हैं। जब जन प्रवाह पतनोन्मुख होता है तो स्वभावतः अभाव, संकट एवं विद्रोह बढ़ते हैं। क्रिया की प्रतिक्रिया का कुचक्र चलता है और बुरे युग के—पाप युग, नरक युग के समस्त लक्षण सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। सत्प्रयत्नों के सत्परिणाम तो स्पष्ट ही हैं। धर्मराज्य, सतयुग आदि ऐसे ही समय को कहा जाता है। युग कैसा है? कैसा होगा? इन प्रश्नों का उत्तर यह पर्यवेक्षण करके दिया जा सकता है कि लोग क्या कर रहे हैं और क्या करने की तैयारियों में लग रहे हैं।

कुविचार और कुकर्म बढ़ने लगें तो वातावरण में भावनात्मक विषाक्तता उत्पन्न होनी स्वाभाविक है। उसका प्रतिफल व्यापक रूप से दुखद दुर्घटनाओं के रूप में परिलक्षित होता है। यही कलियुग है। चंदन वृक्ष सुगंधित होते हैं उन्हें छूकर जो पवन चलता है, वह दूर-दूर तक सुवास बखेरता है, पुष्प वाटिकाएँ भी अपने समीपवर्ती क्षेत्र में सुगंधित और जीव दायिनी प्राण वायु बखेरती हैं। सज्जनों को चंदन वृक्ष और पुष्प पादपों की संज्ञा दी जा सकती है। वे स्वयं तो आंतरिक प्रसन्नता और साथियों की सद्भावना से सुखी संतुष्ट रहते ही हैं, अपनी गरिमा का उपहार सारे वातावरण को प्रदान करते हैं। कीचड़ और कूढ़े से, सढ़े नाले से बदबू उठती है, विषाणु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़ते हैं, कुरुचिपूर्ण वातावरण बनता है और बीमारियाँ फैलती हैं। मनुष्यों के व्यक्तित्व यदि सड़े नाले और कूड़े के ढेर जैसे बने रहें तो उनकी विकृतियाँ उन अकेले को ही कष्ट नहीं देंगी वरन् समूचे वातावरण में अवांछनीय विक्षोभ उत्पन्न करेंगी। यही कलियुग का—पाप युग का स्वरूप है। युगों के भले-बुरे होने में व्यक्तियों का स्तर ही प्रधान कारण होता है। जन समूह के द्वारा अपनाई गई दुष्प्रवृत्तियाँ अपनी प्रतिक्रिया से समूचे वातावरण में ऐसी ही विषाक्तता उत्पन्न करती हैं जो सबके लिए सब प्रकार दु:खदायी परिस्थितियाँ ही उत्पन्न करती चली जाएँ ।

विषाक्तता से वायु मंडल का दूषित होना पदार्थ विज्ञान के आधार पर स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। अध्यात्म विज्ञान के आधार पर यह जानने में भी कठिनाई न होनी चाहिए कि दुष्प्रवृत्तियों के कारण प्रकृति का सूक्ष्म अंतराल विक्षुब्ध होता है और उसकी प्रतिक्रिया ऐसी व्यापक परिस्थितियों के रूप में बरसती है जिनसे संसार को संकटों का सामना करना पड़े। प्रकृति प्रकोप की दुर्घटनाएँ ऐसे ही विक्षुब्ध वातावरण की देन हैं। आवश्यक नहीं कि जहाँ के लोगों की दुष्प्रवृत्तियाँ हों वही बरसें। सूर्य की गर्मी से समुद्र में बादल उत्पन्न होते हैं। आवश्यक नहीं कि वे समुद्र में ही बरसें। वे कहीं भी जाकर बरस सकते हैं। जब सारी धरती और सारा आसमान एक है तो बादलों को कहीं भी बरसने की छूट रहती है।

प्रकृति प्रकोप के रूप में सामूहिक दंड व्यवस्था ही चलती है। अति वृष्टि, अनावृष्टि, भूकंप, बाढ़, तूफान, महामारी, कृमि-कीटक आदि के रूप में कई प्रकार की विकृतियाँ आए दिन दरवाजे पर खड़ी रहने की घटनाएँ पाप युग में होती हैं। सतयुग के संबंध में विवरण मिलता है कि तब मनुष्य दीर्घजीवी होते थे। बाप के सामने बेटा नहीं मरता था। वृक्ष मनचाहे फल देते थे। भूमि से प्रचुर अन्न उपजता था। गौएँ बहुत घी, दूध देती थीं। वर्षा उपयुक्त समय और उपयुक्त मात्रा में होती थी। प्रकृति प्रकोप कभी नहीं होता था। यह प्रकृति की अनुकूलता मनुष्य की सत्प्रवृत्तियों के साथ जुड़ी हुई है। इकॉलॉजी विज्ञान के अनुसार प्रकृति की विचारशीलता, संतुलन व्यवस्था, दूरदर्शिता एवं न्याय प्रियता का अब क्रमश: अधिकाधिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिचय मिलता जा रहा है। मानसिक दुष्प्रवृत्तियों का सामूहिक दंड भी इसी व्यवस्था के अंतर्गत आता है।

व्यक्ति के कर्म का दंड व्यक्ति को मिलना चाहिए। यह व्यवस्था तो चलती ही है, पर सामूहिक उत्तरदायित्वों से बँधा रहने के कारण मनुष्यों को सामूहिक दुष्प्रवृत्तियों की रोकथाम करने का जिम्मेदार माना है। उसकी उपेक्षा की जाए तो वह भी एक पाप बनता है। स्वयं अच्छा रहना तो उचित ही है—पर उतना ही आवश्यक यह भी है कि जिस समाज में रहा जा रहा है उसे परिष्कृत बनाए रहने की जिम्मेदारी निवाहने में उतनी ही तत्परता बरती जाए। अपने आप के हित साधन में लगे रहने वाले—दूसरों की उपेक्षा करने वाले स्वार्थी कहलाते हैं और निंदा के पात्र बनते हैं। यद्यपि स्वार्थ साधन कोई प्रत्यक्ष अपराध नहीं है और न उसमें किसी मर्यादा का प्रत्यक्षतः उल्लंघन ही होता है। फिर भी व्यक्तिवादी, स्वार्थ परायण व्यक्ति निंदित ठहराए जाते हैं, उसका एक ही कारण है कि मनुष्य के लिए सामाजिक सुव्यवस्था के प्रति उतना ही जागरूक रहना आवश्यक माना गया है जितना कि अपने निर्वाह और सुरक्षा का प्रबंध करना।

सरकार कई अपराधों के लिए सामूहिक जुर्माना करती है। समीपवर्ती क्षेत्र में अपराध होता रहे इसका हम से सीधा संबंध नहीं, यह सोचकर उसे रोका न जाए तो इस उपेक्षा को भी मानवी कर्त्तव्य शास्त्र में दंडनीय अपराध माना गया है। सामूहिक जुर्माना ऐसे ही अपराधों में किए जाने की दंड व्यवस्था है। पड़ौस के गाँव में डकैती पड़ती रहे और जिसके पास बंदूक का लाइसेंस है वह डाकुओं का सामना करने न गया तो उस कायरता को अपराध माना जाएगा और उसकी बंदूक जब्त करली जाएगी। सामूहिक प्रकृति प्रकोप भी ऐसे ही सामूहिक दंड विधान के रूप में मनुष्य जाति पर बरसते हैं। आवश्यक नहीं कि जिन्हें कष्ट भुगतना पड़ा है मात्र उन्हीं का अपराध हो। मुहल्ले में गंदगी के ढेर जमा हों तो जमा करने वाले भी और उसे न रोकने वाले भी उस सड़न से हानि उठावेंगे। पड़ौस का छप्पर जलता रहे और अपने घर शांतिपूर्वक बैठे रहा जाए तो बढ़ती हुई आग अपने को भी लपेटने लगेगी। मुहल्ले में गुंडा गर्दी बढ़ती रहे तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनेक सौम्य प्रकृति के बालक भी उस कुचक्र के शिकार किसी न किसी प्रकार बनकर ही रहेंगे। एक व्यक्ति दुष्कर्म करता है, बदनामी सारे परिवार या गाँव की होती है।

यही बात प्रशंसनीय कार्य करने के संबंध में भी है। सत्कर्म करने वाला अपने वंश, परिवार, क्षेत्र, देश, युग सभी को प्रतिष्ठित करता है। यह सामूहिकता का उत्तरदायित्व जिन दिनों ठीक तरह निबाहा जाता है उन दिनों प्रकृति के अनुग्रह की वर्षा सभी पर होती है और जिन दोनों संकीर्ण स्वार्थपरता का बोलबाला होता है तो दुष्प्रवृत्तियाँ पनपती हैं—वातावरण बिगड़ता है और दंड उनको भी भुगतना पड़ता है, जो प्रत्यक्षत: तो निर्दोष दिखाई पड़ते हैं, पर समूचे मानव समाज की दुष्प्रवृत्तियों को रोकने, सत्प्रवृत्तियों में सलंग्न होने के प्रयास की जिम्मेदारी को न निभाने से अनायास ही अपराधी वर्ग में सम्मिलित हो जाते हैं।

युग परिवर्तन के लिए व्यक्ति और समाज में उत्कृष्टता के तत्त्वों का अधिकाधिक समावेश करने के लिए प्रबल प्रयत्नों का किया जाना आवश्यक है। व्यक्ति को चरित्रनिष्ठ ही नहीं सामाजिक भी होना चाहिए। मात्र अपने आपको अच्छा रखना ही पर्याप्त नहीं अपनापन भी विस्तृत होना चाहिए।

आस्थाओं की पृष्ठभूमि वस्तुत: एक अलग धरातल है, उसका निर्माण मस्तिष्कीय संरचना की तुलना में कहीं अधिक जटिल और कहीं अधिक कठोर है। अंत:करण की अपनी स्वतंत्र रचना है। उस पर बुद्धि का थोड़ा बहुत ही प्रभाव पड़ता है। सच तो यह है कि अंत:करण ही बुद्धि की कठपुतली को अपने इशारे से नचाता है। आंतरिक आस्थाओं और आकांक्षाओं की जो अभिरुचि होती है उसी को पूरा करने के लिए चतुर राजदरबारी की भूमिका मस्तिष्क को निभानी पड़ती है। उसका अपना अभिमत जो भी हो उसे करना वही पड़ता है जो अधिपति का निर्देश है। हो सकता है कि नास्तिक वस्तुत: भौतिकता का पक्षधर हो, किंतु व्यवहार में लाते समय तब तक समर्थ न हो सकेगा जब तक अंत:करण भी अनुकूल न हो जाए। किसी भी नशेबाज से वार्तालाप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किया जाए तो वह समझाने वाले से भी अधिक ऐसे तथ्य प्रस्तुत कर देगा जिससे नशा पीने की हानियों का प्रतिपादन होता है। इतनी जानकारी होते हुए भी यह उस लत को छोड़ने के लिए तत्पर न हो सकेगा, उसका कारण एक ही है कि नशे के पक्ष में उसके अंत:करण में इतनी गहरी अभिरुचि जग गयी है जिसे विचारशीलता मात्र के सहारे पलट सकना संभव नहीं हो पाता। शराबी आए दिन अपने को धिक्कारता है—शपथ लेता है; किंतु जब अंदर से लत भड़कती है तो असहाय की तरह शराबखाने की ओर इस प्रकार घिसटता चला जाता है मानो कोई बलपूर्वक उसे अपनी पीठ पर लाद कर लिए जा रहा हो। रास्ते में संकल्प विकल्प भी उठते हैं। लौटने को मन भी करता है। पर सारे तर्क एक कौने पर रखे रह जाते हैं। आदत अपनी जगह स्थिर रहती है।

मस्तिष्क की यहाँ निरर्थकता नहीं बताई जा रही है और न तर्क प्रभाव अध्ययन का—विचार साधन का—महत्त्व कम किया जा रहा है। उसकी उपयोगिता तो है ही और रहेगी भी। बात इतनी भर है कि मस्तिष्क भौतिक जीवन में अत्यंत पेचीदा समस्याओं को सुलझाने और महत्त्वपूर्ण फैसले करने में, पेचीदगियों को सरल बनाने में अद्‌भुत सूझ-बूझ का परिचय दे सकने में समर्थ होते हुए भी अंत:करण में जमे हुए संचित संस्कारों को प्रभावित करने में यत्किंचित ही सहायक हो पाता है। कारण कि वह गहरी परत मस्तिष्क के प्रभाव क्षेत्र में पूरी तरह है नहीं, वरन् उल्टे मस्तिष्क को ही अपने इच्छानुकूल चलने के लिए विवश करता है।

अंत:करण ही मानवीय सत्ता का केंद्र बिंदु है। यह जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही अद्‌भुत इस अर्थ में है कि उसमें तनिक सा अंतर आते ही मनुष्य का सारा स्वरूप बदल जाता है। अद्‌भुत इस अर्थ में कि भावनाओं, संवेदनाओं की दृष्टि से अति सरल होते हुए भी अपनी स्थिति के संबंध में इतना दुराग्रही है कि बदलने में अत्यंत कठोरता का परिचय देता है। परिवर्तन के लिए किए जाने वाले साधारण प्रयत्नों को तो ऐसे ही उपहास में उड़ा देता है। ईश्वर से मिलने की, सूक्ष्म जगत से संपर्क साधने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षमताएँ इसी मर्म स्थल में सन्निहित हैं। ऋद्धियों और सिद्धियों की समस्त रत्न राशियाँ इसी तिजोरी में भरी हुई हैं। इतने पर भी इसका खोल सकना अत्यंत कठिन है। जानकार लोग भी अपने आपको असहाय पाते हैं। आत्मबोध की आवश्यकता समझने-समझाने वाले-उसके द्वारा मिलने वाले चमत्कारों का स्वरूप समझने वाले भी इतना संकल्प नहीं जुटा पाते कि आत्म जागृति का लाभ उठा सकें और साक्षात्कार कर सकें। अपनी जानकारी से स्वयं लाभान्वित न हुआ जा सके तो समझना चाहिए कि कोई बहुत बड़ा कारण या अवरोध काम करता है।

अंत:करण की स्थिति में थोड़ा सा परिवर्तन होते ही जीवन के स्वरूप में असाधारण परिवर्तन प्रस्तुत होता है। वाल्मीक, अजामिल, आम्रपाली, अंगुलिमाल, विल्वमंगल आदि अनेक दुष्ट जीवनों ने पलटा खाया और देखते-देखते कायाकल्प कर लिया। बोधि वृक्ष के नीचे एक दिन गौतम राजकुमार के अंत:करण ने पलटा खाया और वे दूसरे दिन ही भगवान बुद्ध बन गए। समर्थ गुरु रामदास का विवाह मुहूर्त निकट था, उनके भीतर दुस्साहस पूर्वक दूसरे प्रकार का निश्चय कर बैठा। देखते-देखते सारी दिशा धारा ही उलट गई। गृहस्थों जैसा सामान्य जीवन क्रम दूसरे ही दिन महामानवों की, ऋषियों की पंक्ति में जा विराजा। ऐसे चमत्कार अंत:करण के परिवर्तन से ही होते रहे हैं।

उत्थान से पतन और पतन से उत्थान के अचानक परिवर्तनों के अगणित प्रमाण उदाहरण इतिहास के पृष्ठों पर विराजमान हैं। आरंभिक परिस्थितियों से अंतिम उपलब्धि तक क्रमिक गति से चलते हुए आकाश-पाताल जितना अंतर उत्पन्न करने वाली घटनाएँ तो अपनी आँखों के सामने ही असंख्यों देखी जा सकती हैं। इसका मूल कारण एक ही है—अंत:क्षेत्र की प्रबल आस्था और प्रचंड आकाँक्षा। इतना भर सार तत्त्व जहाँ भी होगा वहाँ विपरीत परिस्थितियाँ काई की तरह फटती चली जाएँगी और टिड्डी दल की तरह परामर्शों, सहयोगों और अनुकूलताओं का समूह एकत्रित होता चला जाएगा। पतित, सामान्य और महान जीवनों के अंतरों में परिस्थिति नहीं मन:स्थिति ही आधारभूत कारण रही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंत:करण के कठोर क्षेत्र को प्रभावित करने के लिए अध्यात्म विज्ञान का तत्त्व दर्शन और साधना उपचार ही प्रभावी सिद्ध होता है। योग साधना और तपश्चर्या का समूचा कलेवर इसी प्रयोजन के लिए विनिर्मित हुआ है। कठोर चट्टानें हीरे की नोंक वाले बरमे के अतिरिक्त और किसी औजार से छेदी नहीं जातीं। अंत:करण में जमी अवांछनीयता को निरस्त करके उत्कृष्टता की प्रतिष्ठापना के लिए अध्यात्म-विज्ञान का ही सहारा लेना पड़ेगा। उसी विद्या में पारंगत इंजीनियर अध्यात्मवेत्ता इस क्षेत्र की समस्याओं का समाधान कर सकेगा। विकृत विपन्नताओं के स्थान पर परिष्कृत परिस्थितियों की स्थापना यदि सचमुच हो तो उसका हल अध्यात्म विद्या का अबलंवन लिए बिना और किसी प्रकार निकलेगा नहीं। इस तथ्य को जितनी जल्दी समझा जा सके उतना ही दिशा निर्धारण और सार्थक श्रम करने में सुविधा रहेगी।

व्यक्ति निर्माण के लिए भौतिक उपायों की सार्थकता तब है जब अंत:करण के स्तर में परिवर्तन हो—दृष्टिकोण सुधरे। यह कार्य प्रशिक्षण मात्र से नहीं हो सकेगा। आस्थाओं का स्पर्श आस्थाएँ करती हैं। भावनाओं को भावनाओं से छूआ जाता है। काँटा काँटे से निकलता है और विष, विष से ही मारा जाता है। आस्था अंत:करण की अत्यंत गहरी परतों में अपनी जड़ जमाए बैठी रहती है। उन तक पहुँचना और सुधार परिवर्तन करना सामान्य प्रयासों से संभव नहीं,उसके लिए उच्च स्तर के प्रयत्न करने पड़ते हैं। इसमें उपासनात्मक उपचारों के अतिरिक्त अन्य प्रयत्न अभीष्ट परिणाम उत्पन्न नहीं करते।

उपासना की प्रक्रिया को अंत:करण की वरिष्ठ चिकित्सा समझा जाना चाहिए। कुसंस्कारों की—कषाय कल्मषों की महा व्याधि से छुटकारा पाने के लिए मात्र यही रामबाण औषधि है।

❑

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org